हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार 11 अक्टूबर 2026

9 डीसी ने गेट पास व फसल उठान पर दिए निर्देश



10 एनडीए की लिखित परीक्षा में छाए जिले के होनहार



खबर संक्षेप

राशन डिपो के लाइसेंस के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

झज्जर। हरियाणा सरकार द्वारा प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ बनाने, पात्र परिवारों को राशन की सुलभ उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है। इसके तहत प्रदेश में 2,651 रिक्त राशन डिपो के लाइसेंस जारी करने के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इस प्रक्रिया में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है। डीएफएससी आदित्य कौशिक ने बताया कि उचित मूल्य की दुकानों के लाइसेंस के लिए आवेदन हरियाणा अंत्योदय सरल पोर्टल के माध्यम से किया जा सकता है।

14 को निकलेगी भव्य कलश एवं ध्वजा यात्रा

बहादुरगढ़। रामकृष्ण नगर मंडल के श्री श्याम कृपा परिवार की ओर से प्रथम वार्षिक उत्सव का आयोजन 14 व 15 अक्टूबर को श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ किया जाएगा। बुधवार 14 अक्टूबर को सुबह 9 बजे पुराना कोर्ट परिसर से भव्य कलश एवं ध्वजा यात्रा निकाली जाएगी। फिर 15 अक्टूबर को शाम 6 बजे से भव्य श्याम कीर्तन का आयोजन किया जाएगा। कीर्तन में प्रसिद्ध भजन गायकों एवं श्याम प्रेमियों द्वारा बाबा श्याम की महिमा का गुणगान किया जाएगा।

प्रदूषण फैलाने वालों पर प्रशासन का शिकंजा

झज्जर। एनसीआर क्षेत्र में वायु प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण को लेकर जिला प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिले की सीमा में प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं। कूड़ा-कचरा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट जलाने की घटनाओं को किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि सड़कों, खाली प्लॉटों और अन्य खुले स्थानों पर कूड़ा-कचरा, पराली तथा प्लास्टिक वेस्ट जलाने की घटनाओं को रोकने के लिए विशेष सतर्कता बरती जाए।

माछरौली व ढाकला गांव में सेवा सेतु कैंप कल

झज्जर। जिप सीईओ मनीष फौगाट ने बताया कि जिले भर में सेवा संकल्प अभियान के तहत आमजन को सरकार की योजनाओं का लाभ उनके नजदीक पहुंचाने के उद्देश्य से जिला के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में सेवा सेतु कैम्प लगाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इसी कड़ी में 12 अक्टूबर को माछरौली ब्लॉक मुख्यालय व गांव ढाकला गांव में, 13 अक्टूबर को गांव खुड्डन, 14 अक्टूबर को साल्हावास ब्लॉक मुख्यालय तथा 15 अक्टूबर को गांव भूरावास में सेवा सेतु कैंप आयोजित किए जाएंगे।

कैंटर और दीवार के बीच पिसकर श्रमिक की मौत

बहादुरगढ़। झज्जर रोड स्थित एक कॉलोनी में कैंटर की चपेट में आने से एक श्रमिक की मौत हो गई। इस संबंध में कैंटर चालक के खिलाफ सिटी थाने में केस दर्ज किया गया है। मृतक की पहचान करीब 45 वर्षीय मोहम्मद तमन्ने के रूप में हुई है। वह मूलतः बिहार के दरभंगा जिले से था और फिलहाल यहां बहादुरगढ़ में रह रहा था। झज्जर रोड पर देवी कॉलोनी में स्थित एक केला गोदाम में काम करता था। जानकारी के मुताबिक, शुक्रवार को गोदाम पर एक गाड़ी आई थी। गाड़ी बैक कराते वक्त मोहम्मद तमन्ने हादसे का शिकार हो गया। वह कैंटर और दीवार के बीच में पिस गया।

नवरात्र आज से : कई दिन बाद बाजारों में ग्राहकी बढ़ने की उम्मीद, वाहनों को पार्किंग के लिए चाहिए ज्यादा जगह

बाजारों में पार्किंग की व्यवस्था नहीं होने से सताने लगी जाम की चिंता

- पुराने बस स्टैंड पर रामलीला और मलबे के कारण सिमटी पार्किंग, डाकखाना परिसर में भी नहीं मिलती जगह, पर्याप्त पार्किंग करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

शहर के बाजारों में पार्किंग की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने के कारण वाहन चालकों, दुकानदारों और राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नवरात्र के आगमन के साथ ही बाजारों में ग्राहकी बढ़ने की उम्मीद है। ऐसे में सड़क किनारे वाहन खड़े होने से जाम की स्थिति बनने और पैदल राहगीरों का रास्ता बाधित होने की समस्या भी आएगी।

सिटी पल्स

शहर के चौपटा बाजार, मेन बाजार, सिलानी गेट और आंबेडकर चौक सहित प्रमुख क्षेत्रों में खरीदारी के लिए आने वाले लोगों को वाहन खड़ा करने के लिए जगह तलाशनी पड़ती है। कई बार ग्राहक मजबूरी में अपने वाहन सड़क किनारे खड़े कर देते हैं, जिसके कारण जाम लग जाता है। शहर के पुराने बस स्टैंड परिसर में वाहन खड़े करने के लिए पार्किंग की व्यवस्था है, लेकिन वर्तमान में वहां रामलीला का आयोजन होने और मैदान में मलबा पड़ा होने के कारण पार्किंग के लिए उपलब्ध जगह सीमित हो गई है। कुछ लोग डाकखाना परिसर में भी अपने वाहन खड़े कर देते हैं। दुकानदारों के अनुसार, यहां आसपास की दुकानों के संचालकों के वाहन सुबह से शाम तक खड़े रहते हैं। स्थानीय लोगों ने जिला प्रशासन से सिलानी गेट, चौपटा बाजार, मेन बाजार और आंबेडकर चौक के आसपास पार्किंग की व्यवस्था करने की मांग की है।



झज्जर। आंबेडकर चौक से बेरी गेट वाले रास्ते पर लगा जाम।

पार्किंग के बिना ग्राहक होते हैं परेशान



दुकानदार धौलू सैनी ने कहा कि बाजार में खरीदारी करने आने वाले अधिकांश लोग अपने वाहनों से पहुंचते हैं। यदि उन्हें वाहन खड़ा करने के लिए पार्किंग नहीं मिलती तो वे बाजार में प्रवेश करने से पहले ही परेशान हो जाते हैं। कई ग्राहक सड़क किनारे वाहन खड़ा करने से बचते हैं, जबकि कुछ लोग पार्किंग के लिए चक्कर काटते रहते हैं।

स्कूल नंबर 1 के पास है जगह



शहरवासी सूबे सिंह हरित ने कहा कि त्योहारों के दौरान पार्किंग की उचित व्यवस्था करना जरूरी है, ताकि लोग आसानी से बाजार पहुंच सकें। प्रशासन को इस समस्या का समाधान केवल त्योहारों तक सीमित रखने के बजाय स्थायी व्यवस्था के रूप में करना चाहिए। चौपटा बाजार से नीचे उतरकर बाबा प्रसादगिरी मंदिर की ओर स्कूल नंबर एक के साथ बने चौक के आसपास उपलब्ध स्थान पर पार्किंग विकसित की जा सकती है।

पार्किंग का स्थायी समाधान आवश्यक



शहरवासी बाल किशन बंसल ने कहा कि पार्किंग की कमी का स्थायी समाधान जरूरी है। शहर के प्रमुख बाजारों में खरीदारी के लिए आने वाले लोगों को वाहन खड़ा करने की जगह नहीं मिलती। त्यौहारों के समय यह परेशानी और बढ़ जाती है। बाजारों के पास पार्किंग की सुविधा मिलने से दुकानदारों और ग्राहकों दोनों को राहत मिलेगी।



नवरात्र में अमृत सिद्धि योग

बहादुरगढ़। रविवार से शारदीय नवरात्र शुरू होंगे और 20 अक्टूबर तक चलेंगे। नवरात्र के पहले दिन घरों और मंदिरों में घटस्थापना के साथ मां शैलपुत्री की पूजा-अर्चना की जाएगी। इस बार हाथी पर माता का आगमन सुख-समृद्धि का संकेत माना जा रहा है। प्राचीन देवी मंदिर के पंडित नवराज पंत के अनुसार इस बार नवरात्र में एक अमृत सिद्धि योग, दो सर्वार्थ सिद्धि योग और दो रवि योग बनेंगे। नवमी तिथि 19 अक्टूबर को दोपहर करीब 12 बजे शुरू होकर 20 अक्टूबर को सुबह करीब 10 बजे तक रहेगी। इसके बाद दशमी तिथि शुरू होगी। 20 अक्टूबर को दशहरा मनाया जाएगा।



सीजेपी के दिल्ली प्रदर्शन को लेकर बहादुरगढ़ में भी चढ़ा रहा पारा, पुलिस अलर्ट

दिल्ली जाने से रोकने के लिए इनेलो नेता और पार्षद हिरासत में लिए, बॉर्डर पर सख्त चेकिंग

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

दिल्ली में सीजेपी के प्रदर्शन के चलते बहादुरगढ़ में भी सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही। यहां टिकरी बॉर्डर, झाड़ोदा बॉर्डर, जौंती बॉर्डर, यूईआर सहित दिल्ली से लगती तमाम सीमाओं पर पुलिस व सीआरपीएफ के जवानों का पहरा रहा। दिल्ली प्रदर्शन में जाने की आशंका पर इनेलो नेताओं समेत कई लोगों को डिटेन भी किया गया।

पुलिस द्वारा बॉर्डरों पर नाकाबंदी कर दिल्ली जाने वाले प्रत्येक वाहनों की जांच की गई। निजी वाहन हो या सवारी वाहन, सभी में सवार लोगों से पूछताछ की गई। उनसे दिल्ली जाने का कारण पूछा गया और दस्तावेज भी परखे गए। इस दौरान कुछ लोगों को दिल्ली जाने से रोक भी दिया गया। न केवल बॉर्डर बल्कि रोहद टोल प्लाजा सहित हाइवे व शहर के अंदरुनी हिस्सों में भी नाके लगाए गए थे। दिल्ली की ओर जाने वाले वैकल्पिक मार्गों पर भी पुलिस की नजर रही। कैमरों के जरिये भी निगरानी की गई। सुबह से देर शाम तक पुलिस जवान नाकों पर मुस्तैद रहे। किसी तरह की कोई बड़ी घटना यहां देखने को मिली।

पुलिस अधिकारी दिनभर नाकों का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लेते रहे। हालांकि बॉर्डरों पर वाहनों की जांच के दौरान यातायात प्रभावित नजर आया। यात्रियों को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। दूसरी तरफ, दिल्ली प्रदर्शन में जाने की आशंका के चलते विभिन्न राजनीतिक व अन्य संगठनों से जुड़े कई लोगों को पुलिस की ओर से डिटेन किया गया। पिछले दो-तीन दिन से पुलिस की ओर से ऐसे लोगों का डेटा जुटाया जा रहा था, जो दिल्ली जा सकते हैं।



बहादुरगढ़। टीकरी बॉर्डर पर नाका लगाकर वाहनों की जांच करते पुलिसकर्मी।

मेट्रो स्टेशन खुले रहने से मिली राहत

बहादुरगढ़ के सभी मेट्रो स्टेशन खुले रहे लेकिन तमाम स्टेशनों पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही। गहन जांच के बाद ही मुसाफिरों को मेट्रो रेल में बैठने दिया गया। पुलिस की इस व्यवस्था को लेकर लोगों की मिली जुली प्रक्रिया रही। कुछ लोगों ने राजधानी की सुरक्षा के लिहाज से इन बंदोबस्त को उचित बताया तो कई लोगों ने कहा जांच के नाम पर बेवजह परेशान किया गया है।

इनेलो नेताओं ने हिरासत में लेने पर जताया विरोध



बहादुरगढ़। दिल्ली में सीजेपी के प्रोटेस्ट के मद्देनजर पुलिस ने इनेलो के शहरी जिलाध्यक्ष रामनिवास सैनी, जिला मीडिया प्रभारी एडवोकेट विपिन तथा पार्षद मोहित राठी को शनिवार तड़के हिरासत में ले लिया। तीनों ने इसे नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर प्रहार बताया। रामनिवास सैनी, एडवोकेट विपिन और मोहित राठी ने कहा कि भाजपा सरकार की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाने वालों पर कार्रवाई करना अघोषित इमरजेंसी जैसे हालात का जीता-जागता उदाहरण है। सत्ता के बल पर आवाज दबाई जा सकती है, लेकिन जनता के सवालों और अधिकारों की लड़ाई को खत्म नहीं किया जा सकता। गिरफ्तारियों और दमन की कार्रवाई से विपक्ष की आवाज को कमजोर नहीं किया जा सकता। इनेलो का प्रत्येक कार्यकर्ता जनहित, जन अधिकारों और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।



बहादुरगढ़। प्रदर्शन के दौरान पुतला फूंकते सीटू कार्यकर्ता।

सीटू कार्यकर्ताओं ने फूंका चुनाव आयुक्त का पुतला

हरिभूमि न्यूज ⏭ बहादुरगढ़

लोकतंत्र और मतदान के अधिकार की रक्षा की मांग को लेकर सीटू, अखिल भारतीय किसान सभा और अखिल भारतीय खेत एवं ग्रामीण मजदूर यूनियन के आह्वान पर आदर्श नगर चौक पर विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को बर्खास्त कर गिरफ्तार करने की मांग करते हुए उनका पुतला फूंका। यह प्रदर्शन दिल्ली के जंतर-मंतर पर छात्र-युवा संगठनों के देशव्यापी विरोध प्रदर्शन के समर्थन में किया गया। सीटू की जिला कन्वीनर किरण ने आरोप लगाया कि दिल्ली में प्रदर्शन से पहले छात्र-युवा नेताओं को घरों में नजरबंद किया गया और विभिन्न स्थानों से आ रहे प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया।

उन्होंने इसे लोकतांत्रिक अधिकारों को दबाने का प्रयास बताते हुए इसकी निंदा की। इस अवसर पर सीटू जिला कमेटी सदस्य मुकेश मोरखी, नौजवान सभा की राज्य कमेटी के सदस्य शुभम, अश्विना, सोनम सोनी, किरण मिश्रा, सविता, सुनीता और इनेलो कार्यकर्ता सागर सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

बुकिंग के बहाने सेक्टर-16 में ले जाकर ई-रिक्शा लूटी

बहादुरगढ़ (हरिभूमि न्यूज)। बुकिंग के बहाने शातिरों ने एक युवक से मारपीट कर ई-रिक्शा, मोबाइल व पर्स लूट लिया। मामले में तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपियों से चोरी की दो ई-रिक्शा बरामद की गई हैं। वारदात दिल्ली के निवासी खुरशीद मीर के साथ हुई है।

मुरशीद ने पुलिस को शिकायत दी थी कि वह अपनी ई रिक्शा लेकर मामा चौक पर आया था। इस दौरान तीन युवक उसके पास आए और बोले कि सेक्टर 16 से सामान लेकर आना है। वह उनके साथ चल पड़ा। जब सेक्टर 16 में पहुंचे तो तीनों युवकों ने मारपीट कर उससे मोबाइल, पर्स तथा रिक्शा लूट ली और फरार हो गए। उसने किसी तरह पुलिस को लूट की घटना की सूचना दी। इस शिकायत पर एमआईई चौकी पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। मामले में कार्रवाई करते हुए पुलिस ने तीन आरोपियों कुलदीप निवासी पानीपत, सुभाष निवासी अलीगढ़, यूपी, इंद्रजीत निवासी मांडोठी को काबू किया। पुलिस ने आरोपियों से पूछताछ में लूटे गए सामान के बारे में जानकारी जुटाई। जांच के दौरान एक अन्य मामले का भी खुलासा पुलिस ने किया है। आरोपी इंद्रजीत की निशानदेही पर पुलिस ने लूटी की गई ई रिक्शा तथा लाइनपार थाना क्षेत्र से चोरी की गई रिक्शा बरामद की। आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर उनसे दो रिक्शा बरामद की, न्यायिक हिरासत में जेल भेजा

धर्म | **श्री लवकुश रामलीला कमेटी द्वारा रामलीला मंचन की शुरुआत**

रामलीला के पहले दिन नारद मोह व विश्व मोहिनी स्वयंवर ने मन मोहा

मंच और शस्त्र पूजा के साथ शुरू हुई रामलीला

- झज्जर में किया जाता है तीन रामलीलाओं का मंचन
- भगत सिंह चौक पर श्री विकास रामलीला द्वारा आज से की जाएगी शुरुआत

हरिभूमि न्यूज ⏭ झज्जर

पितृपक्ष श्राद्ध की समाप्ति के साथ ही शहर में रामलीला मंचन का दौर शुरू हो गया है। शनिवार को शहर के पुराना बस स्टैंड परिसर में श्री लवकुश रामलीला कमेटी द्वारा रामलीला मंचन की शुरुआत की गई। श्रीलवकुश रामलीला कमेटी के प्रधान महावीर सैनी ने बताया कि शाम को कलाकारों द्वारा विधिवत रूप से मंच एवं शस्त्र पूजन किया गया। उन्होंने पहले दिन की लीला में नारद मोह, विश्व मोहिनी स्वयंवर, भगवान शिव द्वारा लंकापति रावण व उसके भाई कुंभकर्ण व विभिषण को वरदान देने के अलावा पितृभक्त श्रवण कुमार की कथा के मंचन की बात कही। बता दें कि शहर में प्रमुख रूप से तीन रामलीलाओं का मंचन किया जाता है। इनमें से एक रामलीला का आयोजन दिन के समय होता है जो प्राचीन समय से चली आ रही है। दो रामलीलाओं का मंचन रात्रि में किया जाता है। शहर के भगत सिंह चौक पर होने वाली श्रीविकास रामलीला द्वारा रविवार को मंचन की शुरुआत की जाएगी। इसी दिन प्राचीन रामलीला कमेटी द्वारा श्रीजन्म की झांकी से रामलीला मंचन का आगाज किया जाएगा।



झज्जर। मंच एवं शस्त्र पूजन करते हुए श्रीलवकुश रामलीला के कलाकार।

परनाला हसनपुर में रामलीला आज से

बहादुरगढ़। श्री हरि सेवा दल की फाउंडेशन की ओर से इस बार भी रामलीला का आयोजन किया जा रहा है। परनाला हसनपुर में निजामपुर रोड स्थित शिव मंदिर परिसर में रविवार से इस पांचवें आयोजन का आगाज होगा। देर शाम साढ़े 7 बजे से रामलीला शुरू होगी। आगामी 20 अक्टूबर तक यह आयोजन जारी रहेगा। मंगलवार 20 अक्टूबर को रावण दहन किया जाएगा।



बेरी। मंदिर परिसर में कंट्रोल रूम का जायजा लेते हुए डीसी वर्षा खांगवाल।

डीसी ने बेरी नवरात्र मेले की तैयारियों का लिया जायजा

हरिभूमि न्यूज ⏭ बेरी

माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में आश्विन शारदीय नवरात्र मेले की तैयारियों को लेकर शनिवार को डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों के साथ मेला परिसर का जायजा लिया। उन्होंने निर्देश दिए कि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और सुगम आवागमन के लिए सभी आवश्यक प्रबंध पूरे किए जाएं। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को मंदिर में दर्शन करने और आवागमन में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने मेला परिसर में पार्किंग, सुरक्षा व्यवस्था, पेयजल, रात्रि के समय पर्याप्त रोशनी, स्वास्थ्य सेवाएं, अस्थायी शौचालय, सीसीटीवी, माइक सर्विस और अग्निशमन सेवाओं सहित अन्य जरूरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मेला ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों को संबंधित विभागों की ओर से पहचान पत्र जारी किए जाएं।

एक पन्ने की वित्तीय योजना से बिखरे पैसे को दें सही दिशा

▶▶ कमाई आते ही तय करें किस हिस्से से खर्च, सुरक्षा, कर्ज और निवेश ▶▶ छोटी लेकिन स्पष्ट योजना लंबे समय में बना सकती है बड़ा कोष ▶▶ बीमा, आपातकालीन निधि, कर्ज और निवेश का तय करें क्रम ▶▶ हर महीने आय आते ही पैसा अपने लक्ष्य के अनुसार ही करें आवंटित

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

कमाई अच्छी होने के बावजूद कई लोगों की आर्थिक स्थिति इसलिए मजबूत नहीं हो पाती, क्योंकि उनका पैसा अलग-अलग जगह बिखरा रहता है। किसी बैंक खाते में कुछ रकम, कहीं बीमा पॉलिसी, क्रेडिट कार्ड का बकाया, किसी म्यूचुअल फंड में छोटी-सी राशि और थोड़ी बचत घर में... लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि कुल संपत्ति कितनी है और किस लक्ष्य के लिए कितना पैसा जमा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में जरूरत निवेश के नए विकल्प तलाशने की नहीं, बल्कि पहले से मौजूद पैसों को व्यवस्थित करने की होती है। इसके लिए जरूरी नहीं कि कोई जटिल वित्तीय योजना बनाई जाए। एक पन्ने पर आय, खर्च, कर्ज, सुरक्षा और निवेश की पूरी तस्वीर लिखना भी काफी मददगार हो सकता है। इस योजना का मकसद यह तय करना है कि कमाई खाते में आते ही पैसा कहां और कितना जाएगा, ताकि खर्च के बाद जो बचे उसी से निवेश करने की आदत न बने।

पहला कदम : आर्थिक सुरक्षा मजबूत करें

निवेश शुरू करने से पहले वित्तीय सुरक्षा की नींव मजबूत करना जरूरी है। यदि परिवार में आपकी आय पर दूसरे सदस्य निर्भर हैं तो पर्याप्त स्वास्थ्य बीमा और जरूरत के अनुसार टर्म जीवन बीमा पर ध्यान देना चाहिए। बीमा का उद्देश्य निवेश से कमाई करना नहीं, बल्कि अचानक आने वाले बड़े आर्थिक संकट से परिवार को बचाना है। इसी तरह कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी घरेलू खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि के रूप में अलग रखना उपयोगी है। इसे ऐसे साधन में रखा जाना चाहिए, जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से उपलब्ध हो। इस पैसे को शेयर बाजार में लगाकर ज्यादा रिटर्न कमाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

दूसरा कदम : महंगे कर्ज से पहले छुटकारा

अगर क्रेडिट कार्ड, व्यक्तिगत ऋण या किसी तत्काल ऋण पर बहुत ज्यादा ब्याज दिया जा रहा है तो निवेश बढ़ाने से पहले ऐसे कर्ज को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। मसलन, क्रेडिट कार्ड का बकाया लंबे समय तक छोड़ने पर ब्याज तेजी से बढ़ सकता है। ऐसे कर्ज के रहते बाजार में निवेश करके ज्यादा रिटर्न कमाने की उम्मीद करना जोखिम भरा हो सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं। सामने बकाया रकम, ब्याज दर और हर महीने की किस्त लिखें। ज्यादा ब्याज वाले असुरक्षित कर्ज को पहले चुकाने की कोशिश करें।



हर महीने नहीं, समय समय पर करें समीक्षा

वित्तीय योजना का मतलब रोज शेयर बाजार देखना या बार-बार निवेश बदलना नहीं है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लंबी अवधि के निवेशक के लिए अनुशासन और निरंतरता ज्यादा महत्वपूर्ण है। हां, आय बढ़ने, नौकरी बदलने, शादी, बच्चे होने, घर खरीदने या बड़े कर्ज जैसी परिस्थितियों में योजना की समीक्षा जरूर करनी चाहिए।

तीसरा कदम : लक्ष्यों के हिसाब से करें निवेश

सारी बचत को एक ही जगह लगाना सही रणनीति नहीं है। पहले यह तय करें कि पैसा कब चाहिए। पांच साल से कम अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बहुत ज्यादा जोखिम वाले निवेश से बचना बेहतर है। वाहन खरीदना, घर की मरम्मत, बच्चों की निकट अवधि की फीस या अन्य जरूरी खर्च इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए सुरक्षित बचत विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। वहीं 10 साल या उससे अधिक अवधि वाले लक्ष्यों के लिए बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति, बच्चों की उच्च शिक्षा या लंबे समय में संपत्ति बनाने जैसे लक्ष्यों के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड या व्यापक बाजार सूचकांक आधारित फंड विकल्प हो सकते हैं। हालांकि निवेश का चुनाव व्यक्ति की जोखिम क्षमता, उम्र, आय और लक्ष्य के अनुसार होना चाहिए।

चौथा कदम : निवेश को अपने आप चलने दें

वित्तीय योजना तभी सफल होती है जब उसे नियमित रूप से लागू किया जाए। इसके लिए एसआईपी जैसी स्वचालित व्यवस्था उपयोगी हो सकती है। वेतन या आय खाते में आते ही निर्धारित रकम निवेश के लिए अलग हो जाए तो महीने के अंत में बची रकम निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। मान लीजिए किसी व्यक्ति की मासिक आय 60 हजार रुपये है। वह जरूरी खर्च और सुरक्षा की रकम तय करने के बाद 10 हजार रुपये लंबे समय के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहता है। यदि हर महीने एक निश्चित तारीख को यह रकम स्वतः निवेश हो जाए तो बाजार की रोजाना की खबरों या मूड के आधार पर निवेश रोकने की संभावना कम होगी।

5वां कदम : लिखें पूरी तस्वीर

- मासिक आय : कितनी रकम हाथ में आती है।
- जरूरी खर्च : घर चलाने में कितना खर्च होता है।
- कर्ज : कितना बकाया है और ब्याज।
- आपातकालीन निधि : कितनी रकम अलग रखी।
- बीमा : स्वास्थ्य और जीवन बीमा कितना है।
- निवेश : हर महीने कितनी रकम और किस लक्ष्य के लिए निवेश होगी।
- लक्ष्य : अगले 3, 5, 10 और 20 साल में किन जरूरतों के लिए पैसा चाहिए।
- एक पन्ने से व्यक्ति को हर माह यह समझने में आसानी होगी कि उसकी आय कहां जा रही है व भविष्य के लिए कितना पैसा तैयार हो रहा है।

पुराने खातों और निवेश की भी करें सफाई

कई लोगों के पास जरूरत से ज्यादा बैंक खाते, क्रेडिट कार्ड और छोटे-छोटे निवेश होते हैं। समय-समय पर इनकी समीक्षा करनी चाहिए। जिन खातों या कार्ड का उपयोग नहीं हो रहा है, उनकी जरूरत और शुल्क की जांच करें। अलग-अलग निवेशों की सूची बनाकर देखें कि कहीं एक ही तरह के कई उत्पाद तो नहीं हैं। साथ ही बैंक खाते, बीमा, म्यूचुअल फंड, शेयर और अन्य वित्तीय निवेशों में नॉमिनी की जानकारी अपडेट रखें। परिवार में किसी अनहोनी की स्थिति में यह छोटी-सी सावधानी बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

पैसा बचाना ही पर्याप्त नहीं, उसे सही दिशा देना जरूरी

एक अच्छी वित्तीय योजना वह नहीं जिसमें सबसे ज्यादा निवेश उत्पाद हों, बल्कि वह है जिसमें हर रुपये की भूमिका स्पष्ट हो। पहले सुरक्षा, फिर महंगे कर्ज से मुक्ति और उसके बाद लक्ष्य आधारित निवेश—यह सरल क्रम आर्थिक अव्यवस्था को व्यवस्थित करने में मदद कर सकता है। योजना एक बार बनाकर भूलने के बजाय साल में कम से कम एक बार उसकी समीक्षा करें। धीरे-धीरे आय बढ़ने के साथ निवेश की रकम बढ़ाते रहें। यही अनुशासन लंबे समय में छोटी बचत को बड़ा वित्तीय सहारा बना सकता है।

30 की उम्र में निवेश शुरू कर रहे हैं तो पहले साल ऐसे बनाएं मजबूत आधार

- पहले आपातकालीन निधि और महंगे कर्ज से निपटें
- लक्ष्य के हिसाब से बचत और निवेश करना शुरू करें
- लंबी अवधि के लिए एसआईपी और सूचकांक फंड बेहतर विकल्प

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आपकी उम्र 30 साल है और आपने अभी तक निवेश शुरू नहीं किया है तो घबराने की जरूरत नहीं है। इस उम्र में आपके पास लंबी अवधि का फायदा उठाने के लिए पर्याप्त समय है। हालांकि निवेश की शुरुआत किसी खास शेयर या म्यूचुअल फंड को चुनने से नहीं, बल्कि अपनी आर्थिक स्थिति समझने से होनी चाहिए। पहले साल का लक्ष्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि ऐसी वित्तीय व्यवस्था तैयार करना होना चाहिए जिसे आने वाले वर्षों में आसानी से जारी रखा जा सके। निवेश शुरू करने से पहले तीन सवालों के जवाब तलाशें-पैसा किस लक्ष्य के लिए चाहिए, कब चाहिए और बाजार में गिरावट आने पर आप कितना जोखिम उठा सकते हैं। इसके आधार पर ही निवेश की दिशा तय होगी।

सबसे पहले बनाएं आपातकालीन निधि

यदि आपके पास बचत नहीं है और क्रेडिट कार्ड या व्यक्तिगत ऋण जैसा महंगा कर्ज चल रहा है तो पहले साल का पूरा ध्यान निवेश बढ़ाने के बजाय वित्तीय आधार मजबूत करने पर होना चाहिए। कम से कम तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम आपातकालीन निधि में रखना उपयोगी है। नौकरी जाने, बीमारी, अचानक बड़े खर्च या किसी अन्य आपात स्थिति में यही रकम काम आएगी। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला जा सके। आपातकालीन निधि बनने के बाद ही लंबी अवधि के निवेश को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए।



महंगे कर्ज को निवेश से पहले खत्म करें

क्रेडिट कार्ड का बकाया या ज्यादा ब्याज वाला व्यक्तिगत ऋण आपकी आर्थिक प्रगति को धीमा कर सकता है। इसलिए सभी कर्ज की सूची बनाएं और ब्याज दर देखें। ज्यादा ब्याज वाले कर्ज को पहले चुकाना बेहतर है। कर्ज खत्म होने के बाद उसकी मासिक किस्त के बराबर रकम को निवेश में लगाया जा सकता है। इस तरह कर्ज चुकाने की आदत सीधे निवेश की आदत में बदल सकती है।

हर लक्ष्य की तय करें समय सीमा

निवेश का तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि पैसा कब चाहिए। तीन साल के भीतर जरूरत पड़ने वाली रकम को शेयर बाजार जैसे उतार-चढ़ाव वाले साधनों में लगाने से बचना चाहिए। कार खरीदना, शादी, घर की शुरुआती रकम या निकट अवधि की शिक्षा जैसे लक्ष्य इसके उदाहरण हैं। ऐसे लक्ष्यों के लिए बैंक सावधि जमा, आवर्ती जमा या अन्य अपेक्षाकृत सुरक्षित विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। दूसरी ओर, यदि लक्ष्य 10, 15 या 20 साल दूर है तो बाजार आधारित निवेश पर विचार किया जा सकता है। सेवानिवृत्ति या बच्चे की उच्च शिक्षा जैसे लंबे लक्ष्यों में महंगाई को ध्यान में रखना जरूरी है।

शुरुआती निवेशक के लिए सूचकांक फंड सरल विकल्प

लंबी अवधि के निवेश की शुरुआत करने वाले निवेशक के लिए व्यापक बाजार सूचकांक पर आधारित म्यूचुअल फंड एक सरल विकल्प हो सकता है। ऐसे फंड किसी प्रमुख सूचकांक की कंपनियों में निवेश करते हैं। इससे एक ही कंपनी पर निर्भरता कम होती है और निवेशक को अलग-अलग शेयर चुनने की जरूरत नहीं पड़ती। हालांकि इक्विटी आधारित निवेश में बाजार जोखिम रहता है। इसलिए इसका इस्तेमाल उन्हीं लक्ष्यों के लिए करना चाहिए जिनकी समय सीमा लंबी हो।

उदाहरण से समझें

मान लीजिए रोहन की उम्र 30 साल है और उसे हर महीने कर कटौती के बाद 80 हजार रुपये मिलते हैं। उसके पास पहले से आपातकालीन निधि है। वह दो साल बाद कार खरीदना चाहता है और साथ ही सेवानिवृत्ति के लिए भी निवेश शुरू करना चाहता है। ऐसी स्थिति में वह अपनी क्षमता के अनुसार, उदाहरण के तौर पर, हर महीने 15 हजार रुपये कार के लक्ष्य के लिए सुरक्षित बचत में और 15 हजार रुपये लंबी अवधि के लिए इक्विटी आधारित म्यूचुअल फंड की एसआईपी में लगा सकता है। इस तरह दोनों लक्ष्यों का पैसा अलग रहेगा। कार के लिए रखा पैसा बाजार की गिरावट से प्रभावित नहीं होगा और सेवानिवृत्ति के लिए किया गया निवेश लंबे समय तक बढ़ने का अवसर पाएगा।

जोखिम क्षमता भी समझें

सिर्फ यह देखकर निवेश न करें कि कोई फंड या शेयर पिछले साल कितना बढ़ा। पहले यह समझें कि बाजार में 20-30 प्रतिशत गिरावट आने पर आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी। मान लीजिए आपने 10 हजार रुपये निवेश किए और कुछ समय बाद उसकी कीमत घटकर 8 हजार रुपये रह गई। यदि इससे आप घबरा कर निवेश बेच देंगे तो इक्विटी निवेश आपके लिए कठिन हो सकता है। लेकिन अगर आप उतार-चढ़ाव को स्वीकार कर लंबे समय तक निवेश बनाए रख सकते हैं तो आपकी जोखिम क्षमता ज्यादा हो सकती है। यानी निवेश का चुनाव केवल रिटर्न देखकर नहीं, बल्कि लक्ष्य और जोखिम क्षमता देखकर करें।

बचत को हर माह की आदत बनाएं

- सबसे कम कमाई वाले महीने को आधार बनाएं
- वेतन आते ही बचत अलग खाते में डालें
- पहले तैयार करें अपने लिए आपातकालीन कोष
- लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार

योजना
बिजनेस डेस्क

कई लोगों की कमाई हर महीने एक जैसी नहीं होती। कभी बोनस मिल जाता है तो कभी अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। ऐसे अच्छे महीने में बचत भी बढ़ जाती है, लेकिन अचानक आया बड़ा खर्च या कम आय वाला महीना पूरी बचत खत्म कर देता है। नतीजा यह होता है कि कई साल कमाने के बाद भी व्यक्ति के पास आपात स्थिति के लिए पर्याप्त रकम नहीं होती। समस्या हमेशा कम कमाई नहीं होती, बल्कि नियमित बचत के लिए तय व्यवस्था का अभाव भी इसका बड़ा कारण है। वित्तीय मजबूती के लिए बचत को महीने के अंत में बची रकम पर निर्भर करने के बजाय इसे कमाई का पहला काम बनाना जरूरी है। यानी पैसा आते ही बचत की रकम अलग और उसके बाद खर्च। यही छोटी आदत लंबे समय में मजबूत आर्थिक सुरक्षा तैयार कर सकती है।

पहले समझें, बचत क्यों नहीं हो रही

बचत शुरू करने से पहले यह पता लगाना जरूरी है कि पैसा बच क्यों नहीं रहा। कुछ लोगों की आय हर महीने बदलती है। स्वतंत्र काम करने वाले, कमीशन पर काम करने वाले या कारोबार से जुड़े लोगों के लिए एक महीने की आय दूसरे महीने से काफी अलग हो सकती है। दूसरी समस्या यह है कि बचत का इरादा तो होता है, लेकिन हर महीने कोई न कोई खर्च उसे पीछे धकेल देता है। कई लोग सोचते हैं कि महीने के अंत में जो रकम बचेगी, उसे बचा लेंगे। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बहुत कम रकम बचती है। इसलिए बचत के लिए इच्छा नहीं, व्यवस्था बनाना जरूरी है।

3 माह की आय से तय करें अपना बजट

सबसे पहले पिछले तीन महीनों की कुल आय देखें और उसका औसत निकालें। लेकिन यदि आय में काफी उतार-चढ़ाव रहता है तो औसत आय के बजाय सबसे कम आय वाले महीने को अपना बजट आधार बनाना ज्यादा सुरक्षित हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को तीन महीनों में 40 हजार, 48 हजार और 35 हजार रुपये मिले। औसत आय करीब 41 हजार रुपये बैठती है, लेकिन बजट 35 हजार रुपये की सबसे कम आय को आधार मानकर बनाया जा सकता है। इससे कम आय वाले महीने में भी जरूरी खर्च पूरे करने में परेशानी नहीं होगी। अब इसमें से किराया, राशन, बिजली-पानी, आने-जाने और अन्य जरूरी खर्च अलग करें।



वेतन आते ही पहले बचत करें

नियमित वेतन पाने वालों के लिए सबसे आसान तरीका है—पहले खुद को भुगतान करें। मान लीजिए आपकी मासिक आय 40 हजार रुपये है और आप हर महीने 5 हजार रुपये बचाना चाहते हैं। वेतन खाते में आते ही 5 हजार रुपये दूसरे खाते में स्वतः स्थानांतरित करने की व्यवस्था कर दें। इसके बाद बचे पैसे से महीने का खर्च चलाएं। इसका फायदा यह है कि बचत की रकम खर्च करने वाले खाते में पड़ी ही नहीं रहेगी। बचत को इच्छाशक्ति के भरोसे रखने के बजाय स्वचालित व्यवस्था का हिस्सा बनाया जा सकता है।

आय तय नहीं तो प्रतिशत के हिसाब से बचाएं

यदि कमाई हर महीने अलग है तो निश्चित रकम बचाने के बजाय आय का एक तय प्रतिशत अलग करना बेहतर हो सकता है। उदाहरण के लिए हर भुगतान का 15 से 20 प्रतिशत बचत खाते में डालने का नियम बनाया जा सकता है। मान लीजिए किसी स्वतंत्र पेशेवर की मासिक आय 25 हजार से 60 हजार रुपये के बीच रहती है। वह हर भुगतान का 18 प्रतिशत बचत के लिए अलग करता है। इस तरह कम आय वाले महीने में बचत की रकम कम होगी और ज्यादा कमाई होने पर बचत अपने आप बढ़ जाएगी।

बचत के लिए अलग खाता रखें

बचत और रोजमर्रा के खर्च का पैसा एक ही खाते में रखने से अनजाने में बचत खर्च होने की संभावना रहती है। इसलिए बचत के लिए अलग बैंक खाता रखना उपयोगी हो सकता है। संभव हो तो इसे रोजमर्रा के खाते से अलग बैंक में रखें। बोनस, कर वापसी या अचानक मिली अतिरिक्त रकम का एक हिस्सा सीधे इसी खाते में डाल सकते हैं।

पहले आपातकालीन कोष, बाद में ज्यादा रिटर्न

बचत का पहला उद्देश्य हर बार ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं होना चाहिए। पहले ऐसा आपातकालीन कोष तैयार करें जिससे अचानक आने वाले खर्च के समय निवेश या कर्ज पर निर्भरता कम हो। नियमित वेतन वालों के लिए तीन से छह महीने के जरूरी खर्च के बराबर आपातकालीन निधि एक अच्छा आधार हो सकती है। वहीं जिनकी आय में ज्यादा उतार-चढ़ाव रहता है, वे छह से नौ महीने के जरूरी खर्च के बराबर रकम रखने पर विचार कर सकते हैं। यह रकम ऐसे विकल्प में रखी जानी चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से उपलब्ध हो। आपातकालीन निधि का पहला उद्देश्य सुरक्षा और तरलता है, अधिकतम रिटर्न नहीं।

योजना बनाकर भूल जाना भी ठीक नहीं

बचत की योजना बनाकर उसे भूल जाना भी सही नहीं है। महीने में केवल 15 मिनट निकालकर देखें कि आय कितनी रही, जरूरी खर्च कितना हुआ और तय बचत लक्ष्य पूरा हुआ या नहीं। यदि किराया बढ़ गया, परिवार में नया खर्च जुड़ गया या आय में बदलाव हुआ है तो बचत लक्ष्य में भी बदलाव किया जा सकता है। महत्वपूर्ण यह है कि बचत पूरी तरह बंद न हो।

इन पांच गलतियों से बचें

- महीने के अंत में बचतः तब तक पैसा खत्म हो सकता है।
- एक ही खाते में बचत और खर्चः बचत अनजाने में खर्च हो सकती है।
- सिर्फ अच्छे महीने में बचतः इससे नियमित आदत नहीं बनती।
- बिना बजट तय किए रकम निर्धारित करनाः लक्ष्य आपकी वास्तविक आय से मेल खाना चाहिए।
- योजना की समीक्षा न करनाः आय और खर्च बदलने के साथ बजट भी बदलना चाहिए।

निवेश से पहले बचत की मजबूत नींव जरूरी

शेयर, म्यूचुअल फंड या किसी अन्य निवेश में पैसा लगाने से पहले नियमित बचत की आदत और आपातकालीन निधि तैयार करना जरूरी है। कम रकम से शुरुआत करना कोई समस्या नहीं है। महीने में 500 रुपये भी नियमित रूप से बचाना उस महीने हजारों रुपये बचाकर अगले महीने फिर शून्य पर पहुंचने से बेहतर है।

अलर्ट 3 से 10 साल की अवधि में निवेश करने का बेहतीन विकल्प, लक्ष्य के हिसाब से तय होगी मासिक किस्त, तैयार होगा फंड

बच्चे के नाम हर महीने बचत, तैयार होगा एक लाख का फंड एसबीआई की 'हर घर लखपति' आरडी में 6.7% सालाना ब्याज

समझदारी
बिजनेस डेस्क

बच्चे की पढ़ाई, उच्च शिक्षा या भविष्य की किसी बड़ी जरूरत के लिए समय रहते बचत शुरू करना समझदारी है। ऐसे में अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव से अलग रहकर हर महीने एक निश्चित रकम जमा करना चाहते हैं, तो भारतीय स्टेट बैंक यानी एसबीआई की 'हर घर लखपति' योजना एक विकल्प हो सकती है। यह कोई अलग निवेश उत्पाद नहीं, बल्कि रिकरिंग डिपॉजिट यानी आरडी का एक रूप है। इसमें निवेशक हर महीने एक तय रकम जमा करता है और तय अवधि पूरी होने पर जमा रकम के साथ ब्याज मिलता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस योजना में फिलहाल 6.7% सालाना ब्याज मिल रहा है। निवेश की अवधि 3 साल से 10 साल तक रखी जा सकती है। यानी अभिभावक बच्चे की उम्र और भविष्य के लक्ष्य के हिसाब से अवधि चुन सकते हैं।

क्या है 'हर घर लखपति' योजना?

नाम से लग सकता है कि यह कोई अलग सरकारी योजना है, लेकिन वास्तव में यह एसबीआई की आरडी आधारित सुविधा है। इसका उद्देश्य नियमित बचत के जरिए एक तय लक्ष्य राशि तैयार करना है। इसे सामान्य आरडी की तरह समझ सकते हैं, जिसमें हर महीने एक निश्चित राशि जमा करनी होती है। मसलन, अगर अभिभावक बच्चे के लिए हर महीने थोड़ी रकम अलग रखते हैं तो कुछ वर्षों में यह रकम ब्याज के साथ एक बड़े फंड में बदल सकती है।

3 से 10 साल तक निवेश

इस योजना में 3 साल से 10 साल तक की अवधि चुनी जा सकती है। अवधि का चुनाव बच्चे की जरूरत के हिसाब से करना महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए पांच साल बाद रकम चाहिए तो पांच साल की अवधि वाला लक्ष्य बनाया जा सकता है। अगर जरूरत 10 साल बाद है तो लंबी अवधि का विकल्प चुना जा सकता है। हालांकि निवेश की अवधि तय करते समय यह भी देखना चाहिए कि बीच में पैसों की जरूरत पड़ सकती है या नहीं। समय से पहले आरडी बंद करने पर बैंक के नियम लागू हो सकते हैं।



बच्चे के नाम पर खाता कैसे खुलेगा?

इस योजना में कोई व्यक्ति सिंगल या जॉइंट अकाउंट खोल सकता है। 10 साल से अधिक उम्र के बच्चे के नाम पर भी खाता खोला जा सकता है, लेकिन इसके लिए बच्चे का ठीक से हस्ताक्षर करने में सक्षम होना जरूरी है। यदि बच्चा हस्ताक्षर करने में सक्षम नहीं है तो उसके नाम पर खाता माता-पिता या अभिभावक के साथ खोला जा सकता है। यानी बच्चे की उम्र और उसकी हस्ताक्षर करने की क्षमता के आधार पर खाते का संचालन तय होगा।

1 लाख रुपये का लक्ष्य कैसे पूरा होगा?

अगर आपका लक्ष्य बच्चे के लिए 5 साल में 1 लाख रुपये का फंड तैयार करना है तो उपलब्ध गणना के अनुसार हर महीने करीब 1,420 रुपये जमा करने होंगे। इसी तरह यदि आप 10 साल में 1 लाख रुपये का लक्ष्य रखते हैं तो मासिक जमा करीब 610 रुपये होगी। इससे यह समझना आसान है कि लंबी अवधि चुनने पर मासिक बचत का बोझ कम हो सकता है। हालांकि इन आंकड़ों को उदाहरण के रूप में देखना चाहिए। वास्तविक मासिक किस्त बैंक की लागू ब्याज दर, आरडी की शर्तों और गणना पद्धति के अनुसार बदल सकती है।

लक्ष्य बढ़ाएं तो किस्त भी बढ़ेगी

इस योजना में लक्ष्य केवल 1 लाख रुपये तक सीमित नहीं है। निवेशक अपनी जरूरत के अनुसार 2 लाख, 3 लाख, 4 लाख रुपये या उससे अधिक का लक्ष्य भी निर्धारित कर सकता है। लक्ष्य राशि बढ़ने के साथ मासिक किस्त भी बढ़ेगी। मसलन, जिस परिवार को बच्चे की उच्च शिक्षा के लिए 4 लाख रुपये का फंड बनाना है, वह छोटी अवधि के बजाय लंबी अवधि चुनकर मासिक निवेश का बोझ कम रखने की कोशिश कर सकता है।

छोटी बचत से बड़ा लक्ष्य

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा अनुशासित बचत है। अक्सर परिवार एकमुश्त रकम बचाने की योजना तो बनाते हैं, लेकिन नियमित रूप से पैसा अलग नहीं रख पाते। आरडी में हर महीने तय रकम जमा करने की व्यवस्था होने के कारण बचत की आदत बन सकती है। मान लीजिए परिवार हर महीने करीब 600 रुपये अलग रखता है। यह रकम रोजाना के खर्च में बहुत बड़ी नहीं लगती, लेकिन लंबे समय तक लगातार जमा होने पर ब्याज के साथ एक निश्चित फंड तैयार कर सकती है।

सिर्फ ब्याज देखकर फैसला न करें

हालांकि 6.7% ब्याज आकर्षक लग सकता है, लेकिन निवेश का फैसला केवल ब्याज दर देखकर नहीं करना चाहिए। अभिभावकों को यह भी देखना चाहिए कि बच्चे का लक्ष्य कितने साल बाद है, कितनी रकम की जरूरत होगी और महंगाई के कारण भविष्य में उस लक्ष्य की लागत कितनी बढ़ सकती है। मसलन, आज उच्च शिक्षा पर 5 लाख रुपये खर्च हो रहे हैं तो 8-10 साल बाद यही खर्च काफी अधिक हो सकता है। इसलिए लंबे समय के लक्ष्य के लिए केवल आरडी पर निर्भर रहने के बजाय अन्य निवेश विकल्पों से भी इसकी तुलना करनी चाहिए।

टैक्स और समय से पहले निकासी के नियम भी समझें

आरडी में मिलने वाला ब्याज कर नियमों के दायरे में आ सकता है। इसलिए बड़ी रकम जमा करने से पहले अपनी कर स्थिति के अनुसार जानकारी लेना जरूरी है। इसी तरह अगर बीच में पैसे की जरूरत पड़ती है तो समय से पहले आरडी बंद करने या आंशिक निकासी से जुड़े बैंक के नियम लागू हो सकते हैं। निवेश शुरू करने से पहले एसबीआई की मौजूदा ब्याज दर, आरडी की शर्तें, नाबालिग के खाते के नियम और समय से पहले खाता बंद करने के प्रावधान जरूर जांच लें।

ऐसे समझें योजना

- योजनाः एसबीआई 'हर घर लखपति'
- प्रकारः रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी)
- ब्याज दर 6.7% सालाना
- अवधि 3 से 10 साल
- 5 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 1,420 रुपये मासिक
- 10 साल में 1 लाख का उदाहरण करीब 610 रुपये मासिक
- लक्ष्य 1 लाख से अधिक भी
- खाता सिंगल या जॉइंट
- बच्चे के नाम खाता 10 साल से अधिक उम्र में, शर्तों के अनुसार
- कम उम्र/हस्ताक्षर में असमर्थ बच्चा माता-पिता/अभिभावक के साथ
- ब्याज दर और बैंक के नियम समय के साथ बदल सकते हैं।

गेट पास से लेकर फसल उठान तक व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के निर्देश

डीसी ने खरीद व्यवस्थाओं का जायजा लिया

किसानों को फसल बेचने में कोई परेशानी न हो: उपायुक्त



बेरी। अनाज मंडी बेरी में नमी की जांच करते हुए डीसी वर्षा खांगवाल।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बेरी

शनिवार को डीसी वर्षा खांगवाल ने स्थानीय अनाज मंडी का दौरा कर खरीफ फसलों की खरीद व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंडी में आने वाले किसानों को फसल बेचने से लेकर भुगतान प्राप्त करने तक किसी प्रकार की अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े और पूरी प्रक्रिया पारदर्शी तरीके से संपन्न हो। उन्होंने मंडी में धान व बाजरा की आवक, खरीद प्रक्रिया, फसल की गुणवत्ता जांच, गेट पास जारी करने, खरीदी गई फसल के उठान तथा किसानों को उपलब्ध करवाई जा रही सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि निर्धारित प्रक्रिया के तहत समय पर गेट पास जारी किए जाएं, ताकि किसानों को अपनी फसल बेचने में किसी प्रकार की परेशानी न हो।

■ उपायुक्त ने धान व बाजरा की आवक, खरीद प्रक्रिया, फसल की गुणवत्ता जांची

नौवें दिन भी भूख हड़ताल पर रहे आढ़ती हरेंद्र सिलाना, घटा वजन

झज्जर। पिछले नौ दिनों से बाजरे की सरकारी खरीद को लेकर भूख हड़ताल पर बैठे अनाज मंडी एसोसिएशन के पूर्व प्रधान हरेंद्र सिलाना की तबीयत अब बिगड़ने लगी है। उनके वजन में करीब दस किलोग्राम की कमी आई है। चिकित्सीय टीम सुबह शाम उनके स्वास्थ्य की जांच कर रही है। हरेंद्र सिलाना ने कहा कि उनका वजन दस किलोग्राम तक कम हो गया। लेकिन फिर भी उनका हौंसला कम नहीं हुआ है। वे अपनी बात पर अडिग है, जब तक बाजरे की सरकारी खरीद शुरू नहीं होती, उनकी भूख हड़ताल जारी रहेगी।





झज्जर। कार्यक्रम के दौरान मंचासीन सांसद दीपेंद्र हुड्डा, विधायक कुलदीप वत्स एवं अन्य।। फोटो : हरिभूमि

भाजपा ने हरियाणा को विकास की पटरी से नीचे उतारा : सांसद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

■ किसान हो या नौजवान बीजेपी सरकार ने हर वर्ग को धोखा दिया : सांसद दीपेंद्र

■ किसान को एमएसपी मिलना तो दूर आवाज उठाने पर लाठियां मारी जा रही

शनिवार को क्षेत्र के गांव जहांगीरपुर में बादली और माछरौली ब्लॉक के कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मलेन का आयोजन बादली से विधायक कुलदीप वत्स द्वारा किया गया। जिसमें सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। इस दौरान अपने संबोधन में दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि किसान हो या नौजवान बीजेपी सरकार ने हर वर्ग को धोखा दिया है। चुनाव के समय बीजेपी सरकार ने किसानों को एमएसपी दिलवाने सहित कई वादे किए थे। लेकिन आज तक एमएसपी डिक्लेयर नहीं हुई है। एमएसपी मिलना तो दूर आवाज उठाने पर किसानों को लाठियां मारी जा रही है। हरियाणा को विकास की पटरी से नीचे उतार दिया है, प्रदेश में हर वर्ग परेशान हो चुका है। वहीं विधायक कुलदीप वत्स ने कहा कि क्षेत्रवासियों की उपस्थिति ने उनके उत्साह और विश्वास को कई गुना बढ़ा दिया है। कार्यकर्ताओं की मेहनत, लगन और समर्पण ने ब्लॉक कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलन को विशाल जनसभा का रूप दिया है। बादली की जनता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आप लोगों ने मुझे जो प्यार, सम्मान और आशीर्वाद दिया है, उसका ऋण मैं जीवनभर नहीं चुका सकता।

खबर संक्षेप

सुबह चली ठंडी हवा, दिन में तेज धूप

बहादुरगढ़। अक्टूबर माह में तापमान 30 डिग्री से ऊपर बरकरार है। हालांकि शुक्रवार की शाम को आसमान में बादल छाने के बाद मौसम में परिवर्तन की उम्मीद बंधी। बरसात तो नहीं हुई लेकिन रातभर ठंडी हवा चलती रही। शनिवार की सुबह भी तेज ठंडी हवा चली। हालांकि दोपहर को तीखी धूप रही और अधिकतम तापमान 32 डिग्री दर्ज किया गया। आगामी दो, तीन दिन आसमान में बादल छाए रहने के आसार हैं।

दिल्ली हॉस्पिटल में जांच शिविर आज

बहादुरगढ़। शहर के दिल्ली हॉस्पिटल एवं नर्सिंग होम में रविवार 11 अक्टूबर को निःशुल्क जनरल एवं सर्जिकल जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। सत्येंद्र दहिया ने बताया कि इस शिविर में सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक वरिष्ठ विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा लोगों की जांच कर उन्हें उचित परामर्श दिया जाएगा।



नई शिक्षा नीति पर एलए स्कूल में हुई कार्यशाला

झज्जर : एलए सीनियर सैकेंडरी स्कूल में सीबीएसई के क्षमता निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत नई शिक्षा नीति विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 50 शिक्षकों ने भाग लिया जिसमें सीबीएसई रिसोर्स पर्सन रीतू चावला और सीमा सचदेवा ने शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास बारे जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे को सुरक्षित, सम्मानपूर्ण और भेदभाव मुक्त वातावरण उपलब्ध करवाना शिक्षक की जिम्मेदारी है। विद्यालय प्रबंधक केएम डागर ने बताया कि नए शैक्षणिक सत्र से नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। विद्यालय संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनीता गुलिया और नीलम दहिया ने रिसोर्स पर्सन तथा प्रतिभागी शिक्षकों का आभार व्यक्त किया।

2.47 लाख की ठगी के मामले में दो गिरफ्तार

रोहतक। पर्सनल लोन दिलाने का झांसा देकर जेबीटी शिक्षक से 2 लाख 47 हजार 800 रुपये की ठगी करने के मामले में रोहतक साइबर थाना पुलिस ने दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान दिल्ली निवासी कन्हैया और मुनील के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में पांच आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। दोनों नए आरोपियों को अदालत में पेश किया गया है और मामले की जांच जारी है। पुलिस प्रवक्ता मनीष के अनुसार, मोखरा निवासी सुरेंद्र ने 22 सितंबर 2026 को शिकायत दी थी। शिक्षक को 20 लाख रुपये के पर्सनल लोन की जरूरत थी। इसी दौरान व्यक्ति ने फोन कर खुद को एचडीएफसी बैंक का कर्मचारी बताया और व्हाट्सएप पर उसके निजी दस्तावेज मंगवा लिए। बड़े अधिकारी से बात होने का भरोसा देकर लोन मंजूर कराने का दावा किया।

अभिभावक-शिक्षक बैठक में सर्वांगीण विकास को लेकर चर्चा



झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा के उपलक्ष्य में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में अभिभावकों ने बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन, आदतों, रुचियों व सर्वांगीण विकास को लेकर शिक्षकों से चर्चा की। उन्होंने परीक्षा परिणामों पर संतोष जताते हुए विद्यालय की शिक्षण पद्धति और अनुशासन की सराहना भी की। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने बताया कि उनके संस्थान में नियमित स्कूली शिक्षा के साथ अतिरिक्त शैक्षणिक कोचिंग और आईआईटी फाउंडेशन की तैयारी भी कराई जाती है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और उत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के लिए इस प्रकार की अभिभावक व शिक्षक बैठक आवश्यक है।

कई विभागों ने स्टॉल लगाकर दी योजनाओं की जानकारी

■ जिप सीईओ मनीष और सुरेंद्र शर्मा ने सेवा सेतु कैंप का अवलोकन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

सेवा संकल्प अभियान के तहत नागरिकों को सरकारी सेवाओं एवं जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सहज रूप से उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से शनिवार को मातनहेल के गांव बिरोहड़ में सेवा सेतु कैंप का आयोजन हुआ। जिप सीईओ मनीष फौगाट और सुरेंद्र शर्मा ने सेवा सेतु कैंप का अवलोकन किया।

कैंप में काफी संख्या में ग्रामीणों ने पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त की और उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया। सीईओ मनीष फौगाट ने बताया कि कैंप में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल लगाए गए, जहां विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नागरिकों को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं, सेवाओं और कार्यक्रमों की जानकारी दी जा रही है ताकि लोगों को योजनाओं का लाभ मिल सके।



झज्जर। सेवा सेतु कैंप में योजनाओं की जानकारी लेते हुए लाभार्थी।



झज्जर। शिक्षकों से मिलकर बच्चों की शैक्षणिक प्रगति संबंधी जानकारी लेते हुए अभिभावक। फोटो : हरिभूमि

पीटीएम में विद्यार्थियों की प्रगति पर हुई चर्चा

झज्जर। इंडो अमेरिकन स्कूल में अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के बाद पीटीएम का आयोजन किया गया। इसमें अभिभावकों व शिक्षकों ने मिलकर विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम, विषयवार प्रदर्शन, अनुशासन, नियमित उपस्थिति और सर्वांगीण विकास को लेकर चर्चा की। अध्यापकों ने अभिभावकों को बच्चों की शैक्षणिक प्रगति की जानकारी देते हुए कमजोर विषयों में सुधार के लिए आवश्यक सुझाव भी दिए। विद्यालय निदेशक विजेंद्र कादियान ने कहा कि विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए विद्यालय और अभिभावकों के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ विद्यार्थियों में संस्कार, अनुशासन और आत्मविश्वास विकसित करना भी महत्वपूर्ण है।

पुरानी पेंशन बहाली के लिए शहर में आज निकलेगा संकल्प मार्च



हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर रविवार को पेंशन बहाली संघर्ष समिति की जिला इकाई द्वारा संकल्प मार्च निकाला जाएगा। समिति प्रधान डॉक्टर मनोज कुमार ने बताया कि सुबह नौ बजे महर्षि दयानंद सरस्वती स्टेडियम से शुरू होने वाले मार्च में जिलेभर के कर्मचारी शामिल होकर सचिवालय पहुंचेंगे और उपायुक्त को ज्ञापन सौंपेंगे।

मार्च को सफल बनाने के लिए समिति की जिला कार्यकारिणी द्वारा निरतंर जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। शनिवार को वरिष्ठ उपप्रधान, भूपेंद्र स्वामी, अकाउंटेंट जयवीर कादियान और उपप्रधान अरुण भटनागर के साथ विभिन्न विभागों में कर्मचारियों से संपर्क किया। उन्होंने कहा कि पुरानी पेंशन कर्मचारियों की बुढ़ापे की आर्थिक सुरक्षा और सम्मान से जुड़ा मुद्दा है। उन्होंने कर्मचारियों से अधिक से अधिक संख्या में संकल्प मार्च में शामिल होकर मांग को मजबूती देने की अपील की है।

दिल्ली-रोहतक रेल मार्ग पर ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

बहादुरगढ़। दिल्ली-रोहतक रेल मार्ग पर शनिवार की सुबह हादसा हो गया। यहां रोहद के पास ट्रेन की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान करीब 24 वर्षीय सूरज के रूप में हुई है। सूरज गांव रोहद का रहने वाला था।

मृतक की पहचान करीब 24 वर्षीय सूरज के रूप में हुई

जानकारी के अनुसार, वह पेशे से ट्रांसपोर्टर था। शनिवार की सुबह घर से बाहर गया था। सुबह करीब 10 बजे उसका शव रेलवे ट्रैक पर देखा गया। सूचना पाकर जीआरपी टीम मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की। शव को बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल में लाया गया। प्रथमदृष्टया किसी ट्रेन की चपेट में आकर मौत होने की आशंका जताई जा रही है। असल पुष्टि जांच के बाद हो सकेगी। जीआरपी बहादुरगढ़ ने परिजनों के बयान के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू करा दी।

शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन करना किसी भी नागरिक का मौलिक अधिकार

आंदोलन लंबे समय से रहे हैं लोकतांत्रिक प्रगति का आधार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

लोकतंत्र केवल चुनाव कराने और सरकार बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिकों को अपनी बात कहने, असहमति जताने और अपनी मांगों के लिए शांतिपूर्वक आंदोलन करने का अधिकार भी देता है। जब किसी व्यवस्था, नीति या निर्णय से असहमति होती है, तो विरोध प्रदर्शन जनता की भावनाओं और समस्याओं को सामने लाने का महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। आंदोलनकारियों को डराने, उनकी आवाज को अनसुना करने या बल प्रयोग से आंदोलन समाप्त कर देना लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है।

दरअसल, शांतिपूर्ण विरोध, सविनय अवज्ञा, व्हिसलब्लोइंग और संगठित होकर नागरिक लोकतंत्र के निर्माण, परिष्करण और संरक्षण में योगदान देते हैं। विरोध प्रदर्शन लोकतंत्र का एक अभिन्न अंग है। आंदोलन लंबे समय से लोकतांत्रिक प्रगति का आधार रहे हैं, जो संस्थाओं को अपने आदर्शों के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। सुप्रीम कोर्ट लगातार कहता रहा है कि शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन करना किसी भी नागरिक का मौलिक अधिकार है। ये किसी भी तरह से उनसे छीना नहीं जा सकता। कार्यपालिका या न्यायपालिका, किसी भी कार्रवाई के जरिए इस अधिकार को वापस नहीं ले सकती। विरोध प्रदर्शन लोकतंत्र में नागरिकों और उनकी सरकार के बीच एक अंतर्निहित सहयोगात्मक शक्ति के रूप में कार्य करता है।

युवाओं पर लाठियों से प्रहार करना तानाशाही का प्रमाण



आम आदमी पार्टी प्रवक्ता अभिता द्विजा के अनुसार असहमति लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का प्रमाण है। भारत के संविधान का अनुच्छेद 19 (1) (बी) के अनुसार शांतिपूर्वक विरोध का अधिकार नागरिकों को दिया गया है। लेकिन सीजेपी के आंदोलन से पहले राजधानी की किलेबंदी करना और युवाओं पर लाठियों से प्रहार करना सरकार की तानाशाही का प्रमाण है। हजारों पुलिसकर्मियों की तैनाती, मेट्रो स्टेशनों के प्रवेश-निकास द्वार बंद करना, रेलगाड़ियों को रद्द करना और मोबाइल इंटरनेट सेवाएं रोकना अनुचित है।

संवाद के रास्ते बंद होने पर बढ़ता है असंतोष



कांग्रेस नेत्री शीतल मान के अनुसार आंदोलन नागरिकों का मौलिक अधिकार है, एक सशक्त परंपरा है और एक स्वस्थ लोकतंत्र का सूचक है। इतिहास गवाह है कि अनेक सामाजिक बदलावों और जनहित से जुड़े मुद्दों को आंदोलनों ने व्यापक पहचान दिलाई है। सर्वोच्च अदालत ने सार्वजनिक परिवहन पर व्यापक पाबंदियों को लेकर चिंता जताई थी, लेकिन सरकार का दमनकारी रवैया जारी है। संवाद के रास्ते बंद होने पर असंतोष बढ़ता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सहमति और असहमति के लिए पर्याप्त जगह होनी जरूरी है।

संवाद के माध्यम से समाधान तलाशें



कर्मचारी नेता बंसीलाल के अनुसार लोकतंत्र में विरोध करने का अधिकार एक मूलभूत लोकतांत्रिक सिद्धांत है। आंदोलनकारियों को राजधानी पहुंचने से रोकने की बजाय उनके सवालों का जवाब देना कहीं अधिक प्रभावी लोकतांत्रिक रास्ता था। सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वे विरोध करने वालों की बात सुनें, उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार करें और संवाद के माध्यम से समाधान तलाशें। रास्ते रोकना और नागरिकों को हिरासत में लेना दीर्घकालिक समाधान नहीं है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वाले नागरिकों को अपनी बात रखने का अवसर मिलना चाहिए।

विरोध की आवाज को दबाए नहीं सुनें



सामाजिक कार्यकर्ता सतीश दलाल उर्फ पप्पू के अनुसार लोकतंत्र में विरोध की आवाज को दबाना नहीं, बल्कि सुनना जरूरी है। विरोध प्रदर्शन जनता की शिकायतों, चिंताओं और समस्याओं को सरकार के सामने उजागर करती हैं। आंदोलन में शामिल होने वालों को रोकने के लिए आमजन की आवाजाही और सामान्य जिंदगी को ठप करना सरासर गलत है। सुप्रीम कोर्ट भीकह चुका है कि नागरिकों के सभा करने और विरोध करने के अधिकार पर पूरी तरह बंदिश नहीं लगाई जा सकती है।

NOTICE

In the Court of Assistant Collector, 1st Grade, Bahadurgarh
Ratni Devi Versus Narayani Devi etc.
Date of hearing: 12-11-2026

To
1. Narayani Devi D/o Devi Singh, 2. Prem Devi Wd/o Lakhmi Chand, 3. Ravinder, 4. Virender Ss/o Lakhmi Chand, 5. Beena Wd/o Karan Singh, 6. Jivani, 7. Guddi @ Anita, 8. Sunita, 9. Rambhateri Ds/o Karan Singh, 10. Devender, 11. Jitender All R/o Village Dulhera, Tehsil Bahadurgarh, Distt. Jhajjar

Whereas in the above noted case it has been proved to the satisfaction of this court that above named respondents are avoiding service of summons and cannot be served in the ordinary manner, therefore this publication is issued against the respondents name above to appear before this court on 12/11/2026 personally or through their counsel or failing which exparte proceedings shall be taken against them. Given under my hand and the seal of the court.

AC 1st Grade, Bahadurgarh

संस्कारम् स्कूल के 20 विद्यार्थियों ने उत्तीर्ण की राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की लिखित परीक्षा

एनडीए में छाए झज्जर के होनहार



झज्जर। छात्र को अचीवर्स अवॉर्ड प्रदान करते हुए चेयरमैन डॉक्टर महिपाल।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

■ संस्कारम् समूह के चेयरमैन डॉ. महिपाल ने सम्मानित किया

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास में शनिवार को अर्द्धवार्षिक परीक्षा परिणाम को लेकर अभिभावक-अध्यापक बैठक का आयोजन किया गया। अभिभावकों ने शिक्षकों से बच्चों की शैक्षणिक प्रगति, कमजोर विषयों और आगामी तैयारी को लेकर चर्चा की। दूसरी ओर एनडीए लिखित परीक्षा में विद्यालय के बीस से अधिक विद्यार्थियों के सफल होने से विद्यालय में खुशी का माहौल रहा। संस्कारम् समूह के चेयरमैन डॉक्टर महिपाल ने बताया कि जिले में वर्तमान बैच से सर्वाधिक एनडीए क्वालीफायर्स देने की उपलब्धि उनके संस्थान ने हासिल की है। उन्होंने सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की मेहनत, अनुशासन और शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन का परिणाम है। विद्यालय विद्यार्थियों को रक्षा सेवाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस उपलब्धि पर उन्होंने अभिभावकों व शिक्षकों को बधाई देते हुए उत्तीर्ण विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस दौरान होनहार विद्यार्थियों को अचीवर्स अवार्ड भी प्रदान किए गए।

आरडी ग्रुप ऑफ स्कूल्स के 10 विद्यार्थियों ने उत्तीर्ण की एनडीए की परीक्षा











झज्जर। आरडी ग्रुप ऑफ स्कूल्स के दस विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की लिखित परीक्षा उत्तीर्ण कर संस्थान व जिले का नाम रोशन किया है। परीक्षा में सफल विद्यार्थियों में अक्षित अहलावत, दीया गुप्ता, राजदीप, निशांत, मयंक, लोकेश, नकुल, निखिल, लक्की और शुभम शामिल हैं। विद्यालय निदेशक जितेंद्र सिंह अहलावत ने विद्यार्थियों की सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि नियमित अध्ययन, अनुशासन, मेहनत और उचित मार्गदर्शन से यह उपलब्धि हासिल हुई है। विद्यालय में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए योजनाबद्ध तरीके से मार्गदर्शन दिया जाता है। उन्होंने सफल विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



झज्जर। होनहार विद्यार्थी, स्कूल स्टाफ सदस्य और डायरेक्टर रमेश गुलिया विजयी चिन्ह बनाते हुए।

एचडी के 12 विद्यार्थियों ने हासिल की सफलता

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

■ ग्रुप के सचिव विशाल नेहरा ने छात्रों और शिक्षकों को सराहा

एनडीए की लिखित परीक्षा 2026 का परिणाम घोषित हुआ। जिसमें एच डी साल्हावास के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय के 12 विद्यार्थियों ने एनडीए की लिखित परीक्षा क्वालिफाई की है। एच डी ग्रुप के डायरेक्टर रमेश गुलिया ने बताया कि एनडीए लिखित परीक्षा क्वालिफाई करने वाले विद्यार्थियों में अंकिता जाखड़, दीपांशु, परी, साहिल, टीनू, भावेश जाखड़, मानसी, नवदीप यादव, सार्थक शर्मा, साक्षी, पायल यादव तथा अंकित शामिल हैं। इन सभी विद्यार्थियों ने सफलता हासिल कर विद्यालय, अपने माता-पिता और गुरुजनों का मान बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि विद्यालय में विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जा रही गुणवत्तापूर्ण निःशुल्क कोचिंग, अनुशासित वातावरण और अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन का परिणाम है। विशेष रूप से एनडीए कोचिंग टीम के प्रमुख रोहताश बल्हारा की मेहनत, अनुशासन और समर्पण ने विद्यार्थियों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस शानदार उपलब्धि पर एच डी ग्रुप के सचिव विशाल नेहरा एवं हेमंत गुलिया, प्राचार्या प्रीति राठी ने सफल विद्यार्थियों, एनडीए कोचिंग टीम के प्रमुख रोहताश बल्हारा और पूरी कोचिंग टीम को बधाई और शुभकमानएं दी।

न्यूज डायरी



शिविर में 52 लोगों ने कराई स्वास्थ्य जांच

झज्जर। शनिवार को शहर के ब्रह्माकुमारी आश्रम में आयुष विभाग द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। ब्रह्माकुमारी बहन भावना ने बताया कि सब हेल्थ सेंटर भदानी की आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर मोनिका ने शिविर में आने वाले लोगों की स्वास्थ्य जांच की और जरुरतमंदों में आयुर्वेदिक दवाओं का वितरण किया। इसके अलावा सुरेखा द्वारा लोगों को रोगानुसार योगाभ्यास भी कराया गया। शिविर में कुल 52 लोगों की जांच की गई।



भाविप ने ग्रीन बेल्ट में लगाए 70 पौधे

बहादुरगढ़। भारत विकास परिषद ने शनिवार को भाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जैन के 70वें जन्मदिन पर क्लीन एंड ग्रीन एसोसिएशन के सहयोग से ऑटो मार्केट के सामने 70 बड़े पौधे लगाए गए। कार्यक्रम में प्रांतीय संरक्षक पवन जैन और मिशन अस्पताल के डायरेक्टर डॉ. अजय जैन ने मुख्य अतिथि के रूप में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया। पवन जैन ने बताया कि ये 70 पौधे मियावाकी तकनीक से लगाए गए हैं। पौधों को पर्याप्त पानी उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की जाएगी तथा समय-समय पर उनकी देखभाल भी सुनिश्चित की जाएगी। सतीश शर्मा और मुकेश शर्मा ने कहा कि हर व्यक्ति को विभिन्न खुशी के अवसरों पर पौधे लगाकर उनकी देखभाल का संकल्प लेना चाहिए। मुरारी लाल, वीरेंद्र कौशिक, कर्नल अनिल जून, सुभाष शर्मा, संजय गर्ग, एनएस कपूर, वजीर सिंह दहिया, हरिचंद, विजयपाल आदि ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का संकल्प लिया।



खेल महाकुंभ के लिए 21 तैराकों का हुआ चयन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ के लिए शनिवार को एचएल सिटी में स्थित चैम्पियन्स एक्वेटिक एकेडमी में जिला स्तरीय ट्रायल आयोजित किए गए। ट्रायल के दौरान बेहतर प्रदर्शन करने वाले 16 लड़कों और 5 लड़कियों सहित कुल 21 खिलाड़ियों का चयन राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ के लिए किया गया।

हरियाणा स्विमिंग एसोसिएशन के महासचिव एवं हरियाणा ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष अनिल खत्री ने सिटी बजा कर ट्रायल का शुभारंभ किया। उन्होंने बताया कि चयनित खिलाड़ी अब राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ में जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे। चयनित हुए खिलाड़ियों में अर्जुन, मानसू, कुशाल, दिव्य, लोकेश, भाविक गुलिया, तुषार, चैतन्य, अपूर्व, शोभित गिल, गौरव, सुमित, देव यादव, गौरव कोशिक, विहान, मयंक यादव, अंजलि, काजल दलाल, पूरवी सहरावत, जानवी व वर्षा शामिल हैं। झज्जर जिले के ये तैराक इसी महीने के अंत मे अंबाला में आयोजित राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ में हिस्सा लेंगे।

भारत विकास परिषद ने मनाया सेवा दिवस

■ राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हुआ कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़



बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को सम्मानित करते भाविप पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

भारत विकास परिषद हरियाणा मध्य प्रांत ने राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जैन के 70वें जन्मदिन को सेवा दिवस के रूप मे मनाया। शहर के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हुए कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सेवा कार्य किए गए। छात्राओं की सुविधा के लिए सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीन भेंट की गई।

परिषद् द्वारा संचालित सिलाई केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त दो जरूरतमंद महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सिलाई मशीनें प्रदान की गईं। जरूरतमंदों को 24 गर्म कंबल वितरित किए गए। विद्यालय के 24 जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्कूल ड्रेस तथा 40 विद्यार्थियों को जूते दिए गए। इसके अलावा 24 मेधावी विद्यार्थियों को स्टेशनरी सामग्री देकर प्रोत्साहित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 24 शिक्षकों को श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विद्यालय परिसर में 11 पौधे भी लगाए गए। राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुरेश जैन के मार्गदर्शन में हुए कार्यक्रम में क्षेत्रीय महासचिव राकेश शर्मा भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष दीपक जिंदल ने की। मंच संचालन जिला समन्वयक सतीश शर्मा ने किया।

सुरेश जैन ने कहा कि सेवा से बढ़कर कोई कार्य नहीं है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ नागरिक तैयार करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है। संस्कारवान युवा ही समाज और राष्ट्र को सही दिशा दे सकते हैं। प्रांतीय संरक्षक पवन जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस दौरान वनीत अग्घी, सुनील जैन, अमृत लाल, संदीप बंसल, गीता गुप्ता, अशोक गुप्ता, मुकेश बंसल, रमेश गुप्ता, विजय पुन्हानी, एमएस भाटी, रमेश सुखीजा, मुरारीलाल, संजय गर्ग, राजबीर बंसल, प्राचार्या मंजू रानी, प्राचार्या इंदू शर्मा, प्राचार्या प्रवीण दहिया, प्राचार्य कुलदीप जून के अलावा प्राध्यापक डॉ. राकेश वत्स, विजय छिल्लर, बिशनदत और दिनेश भारद्वाज मौजूद रहे।



भारत की प्रेरणादायी महिलाओं को किया नमन

बहादुरगढ़। वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर स्वयंसेविकाओं ने भारत की महान एवं प्रेरणादायी महिलाओं को नमन करते हुए उनके जीवन, संघर्ष, उपलब्धियों और समाज के प्रति योगदान को याद किया। स्वयंसेविकाओं ने मदर टेरेसा, कल्पना चावला, मैरी कॉम, साइना नेहवाल और किरण बेदी जैसी महान महिलाओं के जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके योगदान पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि इन महिलाओं ने अपने दृढ़ संकल्प, कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास और साहस के बल पर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई तथा देश का नाम रोशन किया। प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि प्रत्येक बालिका के भीतर असीम संभावनाएं छिपी होती हैं। उन्होंने स्वयंसेविकाओं को प्रेरित किया कि वे महान महिलाओं के जीवन से सीख लेकर अपने लक्ष्य निर्धारित करें और एक आत्मनिर्भर, सशक्त एवं संवेदनशील नागरिक बनें। स्वयंसेविकाओं ने दोहराया कि बेटियां अपने संकल्प और परिश्रम से सपनों को साकार करने वाली शक्ति हैं।

ट्रक चालकों और ट्रांसपोर्टरों को पुराने वाहनों की स्क्रैपिंग नीति के बारे में किया जागरूक

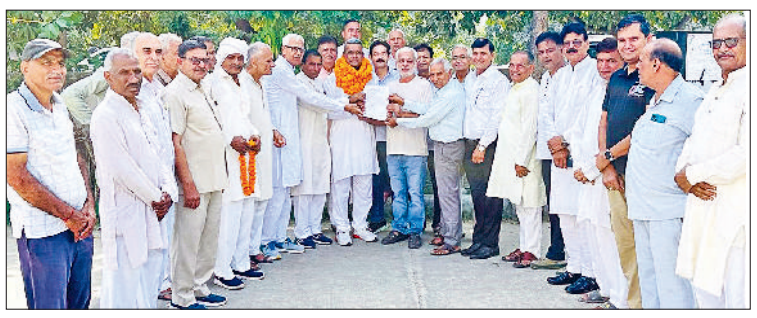
बहादुरगढ़। पुलिस की ओर से नया गांव रोड स्थित शिव टर्बो ट्रक यूनियन में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ट्रक चालकों और ट्रांसपोर्टरों को पुराने बीएस 3 व बीएस 4 वाहनों की स्क्रेपिंग नीति की जानकारी दी। उप निरीक्षक देवेंद्र ने एनजीटी के आदेशों, हरियाणा सरकार के निर्देशों और एनसीआर में वाहनों के संचालन संबंधी नियमों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि निर्धारित शर्तों के तहत पुराने वाहन स्क्रैप कराने पर नए वाहन के मोटर वाहन कर और पंजीकरण शुल्क में छूट सहित अन्य लाभ मिल सकते हैं। इनकी पात्रता संबंधित नियमों पर निर्भर करेगी। उन्होंने वाहन मालिकों से स्क्रैपिंग से पहले संबंधित विभाग से लाभों की पुष्टि करने और यातायात नियमों का पालन करते हुए पर्यावरण संरक्षण में सहयोग देने की अपील की।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295154800, 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005



श्रीमद्भागवत कथा में सात दिनों तक बही भक्ति की बयार

झज्जर। शहर के सीताराम गेट स्थित सैनी धर्मशाला में चल रही श्रीमद्भागवत कथा का शनिवार को समापन हो गया। कथा व्यास त्रिवेंद्र दास महाराज ने अंतिम दिन श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत महापुराण की महिमा, भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं और भक्ति मार्ग के महत्व से अवगत कराया। कथा के दौरान श्रद्धालु भक्तिरस में डूबे नजर आए और धर्म, सत्य, सदाचार तथा मानव कल्याण का संदेश दिया गया। इस मौके पर सुनील कुमार, अशोक सैनी, दीपक सैनी, सूबे सिंह हरित, बाल किशन बंसल, काकू दीवान, उषा सैनी, अनीता गुर्जर, कमला सैनी, हरीश, चांदनी, कविता सैनी, सीमा, रिंकू, पायल सैनी, लविश, मंजीत, महक, पानवी, दिशा, खुशी सहित अन्य श्रद्धालु भी उपस्थित रहे।



रामफल बने सेक्टर-2 आरडब्ल्यूए के प्रधान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

सेक्टर-2 रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) के प्रधान पद की जिम्मेदारी रामफल दलाल को सौंपी गई है। मूल रूप से गांव छारा के निवासी रामफल दलाल रेलवे मंत्रालय में सेक्शन ऑफिसर के पद पर कार्यरत हैं। उनके प्रधान बनने पर क्षेत्र के लोगों ने खुशी जताते हुए उम्मीद व्यक्त की है कि उनके नेतृत्व में सेक्टर की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाएगा और विकास कार्यों को गति मिलेगी। रामफल दलाल के प्रधान बनने पर पार्षद बिजेंद्र दलाल, संजय गुलिया, राजबीर दलाल, गुलाब मलिक, कैप्टन बलवान सिंह, रामधन दलाल, नरेंद्र शर्मा, कृष्ण वकील, डीपी दहिया, बिजेंद्र जून और सतीश शेरावत सहित अन्य लोगों ने उन्हें बधाई दी। सभी ने आशा जताई कि आरडब्ल्यूए के माध्यम से सेक्टरवासियों की समस्याओं को संबंधित विभागों और प्रशासन के समक्ष प्रभावी ढंग से उठाया जाएगा। साथ ही, क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने, साफ-सफाई बनाए रखने और विकास कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएंगे।



स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में पूनम रही प्रथम

झज्जर। राजकीय महाविद्यालय दुजाना में आयोजित दो दिवसीय प्रतिभा खोज कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पदक जीते। कार्यवाहक प्राचार्य नसीब सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस प्रतियोगिता का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलिक करके किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका डॉक्टर अनीता और डॉक्टर दीपा ने बताया कि कार्यक्रम में कबाड़ से जुगाड़, मेहंदी, रंगोली, स्लोगन लेखन, पोस्टर मेकिंग, कविता पाठ, समूह गीत, एकल गीत, नृत्य, गजल, भजन और संस्कृत श्लोकोच्चारण सहित विभिन्न प्रतियोगिताएं कराई गईं। मंच संचालन डॉक्टर सीमा कुंडू ने किया। कबाड़ से जुगाड़ प्रतियोगिता में जन्नत ने प्रथम व प्रीति ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार मेहंदी में सुषमा प्रथम व नीरज द्वितीय, रंगोली में नवीन प्रथम, स्नेहा द्वितीय व आरती तृतीय स्थान पर रहे। स्लोगन लेखन में पूनम प्रथम, कृष द्वितीय व रीतिका तृतीय रही जबकि पोस्टर मेकिंग में आस्था पुनिया ने पहला व खुशी ने दूसरा स्थान हासिल किया। हिंदी कविता पाठ में कृष प्रथम, आस्था द्वितीय व स्नेहा तृतीय तथा एकल नृत्य में आशिमा प्रथम, जन्नत द्वितीय व भारती तृतीय स्थान पर रही।

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

सेठ रामअवतार गोयल गौ एवं वन्यजीव उपचार केंद्र में हुआ धार्मिक कार्यक्रम

कामधेनु यज्ञ व गोदान में उमड़े श्रद्धालु

डॉ. स्वामी दिव्यानंद जी महाराज ने सभी गोसेवकों को स्मृति चिह्न भेंट किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़



बहादुरगढ़। गोदान करने वालों को स्मृति चिह्न देते समिति पदाधिकारी।

बादली रोड पर सेठ रामअवतार गोयल गौ एवं वन्य जीव उपचार केंद्र में शनिवार को दूसरे दिन भी गौदान कार्यक्रम जारी रहा। गीताज्ञानेश्वर डॉ. स्वामी दिव्यानंद जी महाराज के सानिध्य में कामधेनु यज्ञ विधि विधान से हुआ। शनिवार को मनीष गुलयानी, आनंद शर्मा जटवाड़ा, सतीश शर्मा जटवाड़ा, नरेंद्र गर्ग, रामवीर, पालेराम जांगड़ा, ईशान गर्ग, अमित गुप्ता, अक्षित राठी, स्व. रामकिशनी के परिजन, मंजू राजा जून, ममता सिंघल, राकेश भारद्वाज, संजीव शर्मा, रविंद्र वशिष्ठ, प्रकाशो देवी, उग्रसेन गोयल, मनीषा रमेश सैनी, संजय गुप्ता, विनय गोयल सीए, संतोष देवी, राजबाला, रामनिवास दलाल, अमित गुप्ता, अशोक खुराना, संतराम, उपांशु राठी, संतरा देवी, चिरंजीलाल गुप्ता, नरेंद्र राठी, सतीश तहलान, राजकुमार वाधवा, लवलीश अत्री, रविंद्र राठी, प्रदीप राठी, महेंद्र राठी, वेद प्रकाश गलिया, महेश डबास, नरेश नंबरदार, कृष्ण कुमार, ब्रजमोहन, गीता सुदेश, लखविंदर सिंह, दिनेश कौशिक, हरिराम, अशोक जांगड़ा, राजेंद्र, जीतेंद्र यादव आदि ने गौदान किया। डॉ. स्वामी दिव्यानंद जी महाराज ने सभी गोसेवकों को स्मृति चिह्न भेंट किया। शाम के समय किला मोहल्ला स्थित श्री करोड़ रामलीला सभा में स्वामी दिव्यानंद जी महाराज द्वारा श्री गौ गोपाल भक्ति कथा सुनाई गई। मंच संचालन समिति सदस्य नीतीश गौड़ ने किया।



हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 11 अक्टूबर 2026

संस्कृति-आस्था का उल्लास
नवरात्रों के बहुरंगी उत्सव


बंगाल की पारंपरिक दुर्गा पूजा


गुजरात में नवरात्र का महत्वपूर्ण अंग-डांडिया


ओडिशा के कटक में 'चांदी मेधा' से सजी मां दुर्गा की प्रतिमा


उत्तर भारत में नवरात्र के दौरान होता है रामलीला का आयोजन

शारदीय नवरात्र विशेष

भारत के विभिन्न स्थानों में नवरात्र मनाने के अलग-अलग तरीके हैं। ये इस बात के प्रमाण हैं कि हमारी संस्कृति कितनी समृद्ध और विविधतापूर्ण है। बंगाल की कलात्मकता, गुजरात का नृत्य, दक्षिण का गोलू और मैसूर का राजसी वैभव, सब मिलकर एक ही सनातन शक्ति की आराधना करते हैं। यह विविधता ही हमारे देश की असली पहचान और सुंदरता है। आइए भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों और दुर्गा पूजा के अनूठे और मनमोहक स्वरूपों पर एक नजर डालते हैं।

आवरण कथा
शिखर चंद जैन

विविधता में एकता का महापर्व नवरात्रों में होने वाली दुर्गा पूजा, भारत के सबसे बड़े और उल्लासपूर्ण त्योहारों में से एक है। यह केवल मां शक्ति की आराधना का पर्व नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक, सामाजिक समरसता और उल्लास का भी जीवंत अवसर है। यद्यपि इस उत्सव का मूल भाव महिषासुर मर्दिनी मां दुर्गा की आसुरी शक्तियों पर विजय का उत्सव मनाना है, लेकिन देश के अलग-अलग राज्यों में इसे मनाने की शैलियां, परंपराएं और सांस्कृतिक रंग पूरी तरह भिन्न हैं।

बंगाल में दिखता है परंपरा-संस्कृति का संगम

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा का रूप सबसे अधिक व्यापक, भव्य और पारंपरिक होता है। यहां यह उत्सव केवल पांच दिनों का नहीं, बल्कि पूरे साल की तैयारी का परिणाम होता है। पारंपरिक बंगाली घरों और पुराने अभिजात्य परिवारों (राजबाड़ी की पूजा) में आज भी मां दुर्गा की 'एकचाला' (एक ही अर्द्धवृत्त फ्रेम में सभी देवताओं की मूर्तियां) प्रतिमा स्थापित की जाती है। कोलकाता और अन्य शहरों में समकालीन कला, सामाजिक संदेशों या प्राचीन मंदिरों की प्रतिकृतियों पर आधारित विशाल पंडाल बनाए जाते हैं, जिन्हें देखने के लिए देश-विदेश से लोग आते हैं। महाष्टमी के दिन नौ वर्ष से कम आयु की कन्याओं को मां दुर्गा का स्वरूप मानकर उनकी विशेष पूजा की जाती है, जो नारी शक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक है। धुनुची (धूप और नारियल के छिलकों से सुलगता पात्र) के साथ किया जाने वाला ऊर्जावान धुनुची नृत्य यहां का मुख्य आकर्षण है। वहीं, विजया दशमी के दिन विवाहित महिलाएं मां को सिंदूर अर्पित करने के बाद आपस में सिंदूर लगाकर सुखद भविष्य की कामना करती हैं।


महाराष्ट्र में नवरात्र के दौरान 'भोंडाला' खेलती महिलाएं

ओडिशा-असम में शक्तिपीठों की आराधना

पूर्वी भारत के राज्यों ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा का अपना ही विशिष्ट और प्राचीन स्वरूप देखने को मिलता है। ओडिशा के कटक शहर में दुर्गा पूजा के दौरान मां की मूर्तियों के पीछे शुद्ध चांदी के कलात्मक मुकुट और झांकियां बनाई जाती हैं, जिन्हें 'चांदी मेधा' कहा जाता है। यहां का विसर्जन जुलूस अपनी भव्यता और संगीत आयोजन के लिए प्रसिद्ध है। जबकि असम में कामाख्या मंदिर और शक्तिपीठों के प्रभाव के कारण यहां मां दुर्गा की पूजा तांत्रिक और पारंपरिक विधि-विधान से की जाती है। यहां 'अंजली' और 'महाप्रसाद' वितरण का विशेष महत्व होता है।

गुजरात में होता है आयोजित गरबा-डांडिया का महाउत्सव

गुजरात में नवरात्रों में मां अंबा और मां दुर्गा की आराधना नृत्य और संगीत के माध्यम से की जाती है। नवरात्रों में युवक-युवतियां पारंपरिक परिधानों में सजकर मां की ज्योत (गरबी) के चारों ओर तालियों और लोकगीतों के साथ गरबा और डांडिया खेलते हैं। यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप का सबसे बड़ा मंच बन जाता है, जहां युवा से लेकर बुजुर्ग तक पूरी ऊर्जा के साथ शामिल होते हैं।

महाराष्ट्र में होती है घटस्थापना और शस्त्र पूजा

महाराष्ट्र में नवरात्र और विजया दशमी का पर्व लोकमान्य तिलक द्वारा पुनर्जीवित सार्वजनिक गणेशोत्सव की तरह ही सामाजिक सहभागिता के साथ मनाया जाता है। अश्विन प्रतिपदा के दिन घरों में कलश स्थापना (घटस्थापना) और नौ दिनों तक अखंड दीप प्रज्वलित करने की परंपरा है। महाराष्ट्र में महिलाओं और विशेषकर युवतियों के लिए 'भोंडला' या 'हदस्तोत्सव' खेलने की अनूठी परंपरा है, जिसमें हाथी के चारों ओर घेरा बनाकर लोकगीत गाए जाते हैं। विजया दशमी के दिन यहां शमी के पत्तों (जिसे स्वर्ण माना जाता है) को एक-दूसरे को देकर शुभकामनाएं दी जाती हैं। इस अवसर पर औजारों तथा हथियारों की पूजा भी की जाती है।

दक्षिण भारत की शान है बोम्माइ गोलू और शाही दशहरा

दक्षिण भारत (विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश) में दुर्गा पूजा का स्वरूप कला और शाही इतिहास से जुड़ा हुआ है। तमिलनाडु और कर्नाटक में नवरात्र के दौरान घरों में सीढ़ीनुमा रैक बनाकर देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और जीवन से जुड़ी गुड़ियों (बोम्माइ) को सजाया जाता है। इसे 'गोलू' कहा जाता है' जहां महिलाएं एक-दूसरे के घर जाकर हल्दी-कुमकुम और उपहार का आदान-प्रदान करती हैं। मैसूर पैलेस में मनाया जाने वाला दशहरा पूरी दुनिया में मशहूर है। यहां विजया दशमी के दिन सजे-धजे हाथियों की सवारी निकाली जाती है, जिसमें मां चामुंडेश्वरी की स्वर्ण प्रतिमा को हाथी पर विराजमान कर भव्य जुलूस निकाला जाता है।


दक्षिण भारत में नवरात्र के दौरान बोम्माइ गोलू की सजावट

उत्तर भारत में रामलीलाओं की धूम

उत्तरी भारत में नवरात्रों का समापन रावण दहन और रामलीला के साथ विजया दशमी के रूप में मुख्य रूप से होता है। विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश में इस दौरान जगह-जगह रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही इस परंपरा का क्रेज आज भी है। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू घाटी में मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव बेहद अनूठा है। यहां सात दिनों तक स्थानीय देवी-देवताओं की पालकियों की भव्य रथ यात्रा निकलती है। यह उत्सव तब शुरू होता है, जब देश के बाकी हिस्सों में दशहरा समाप्त हो जाता है। यहां मां दुर्गा के साथ भगवान रघुनाथ की पूजा का मुख्य विधान है। *

सृष्टि का मूल आधार है 'शक्ति'। शक्ति की यह आराधना केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता जितनी ही प्राचीन और वैश्विक है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मातृ शक्ति को नाम-तरीकों से पूजा जाता रहा है।

दुनिया भर में शक्ति पूजा
स्वरूप-मान्यताएं हैं अलग-अलग

आस्था / अंजू जैन



भारतीय उपमहाद्वीप को शक्ति पूजा का वैश्विक उद्गम केंद्र माना जा सकता है। यहां 'शाक्त संप्रदाय' के अंतर्गत शक्ति को ही सर्वोच्च सत्ता के रूप में पूजा जाता है। भारत में मां दुर्गा, काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूपों में शक्ति का त्रिविध स्वरूप आकर्षण, ऐश्वर्य और ज्ञान पूजनीय है। वर्ष में दो बार आने वाले 'नवरात्रि' के पावन अवसर पर नौ दिनों तक आदिशक्ति के नौ अलग-अलग रूपों (शैलपुत्री से लेकर सिद्धिदात्री तक) की पूजा की जाती है। भारत, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, तिब्बत और श्रीलंका में फैले 51 शक्तिपीठ शक्ति पूजा के भौगोलिक और आध्यात्मिक विस्तार का सबसे बड़ा प्रमाण हैं। शक्ति पूजा की व्यापकता पूरी दुनिया में प्राचीन काल से आज भी विद्यमान है।

प्राचीन मिस्र में 'आइसिस' और 'सेखमेट' की आराधना: यदि हम प्राचीन वैश्विक सभ्यताओं की ओर रुख करें, तो नील नदी की घाटी (मिस्र) में


मिस्र सभ्यता की देवी 'आइसिस'

शक्ति पूजा का एक बेहद समृद्ध इतिहास मिलता है। मिस्र की सभ्यता में देवी 'आइसिस' को मातृत्व, जादू और जीवन के पुनर्जन्म की परम देवी माना जाता था, जिसकी तुलना भारतीय संस्कृति की मां पार्वती से की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर, युद्ध और विनाश की उग्र देवी 'सेखमेट' का स्वरूप भारतीय परंपरा की मां काली से हूबहू मेल खाता है। सिंह के मुख वाली देवी सेखमेट को न्याय और संहार की शक्ति माना जाता था, जो बुरी ताकतों से ब्रह्मांड की रक्षा करती थीं।

ग्रीक (यूनानी) सभ्यता में देवियों का महातम्य: यूनान के प्राचीन दर्शन और पौराणिक कथाओं में भी स्त्री शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ग्रीक पौराणिक कथाओं में देवी 'अथेना' को बुद्धि, ज्ञान और युद्ध की रणनीति की देवी माना गया है, जो मां सरस्वती और मां दुर्गा के मिले-जुले स्वरूप को दर्शाती हैं। इसी प्रकार, प्रकृति, जंगली जीवों और प्रसव की देवी 'आर्टेमिस' और पृथ्वी माता के रूप में पूजी जाने वाली देवी 'डेमेटर' (जिन्हें हम मां शाकंभरी या अन्नपूर्णा कह सकते हैं) की पूजा यूनानी समाज में अनिवार्य रूप से की जाती थी। ओलंपिक खेलों की शुरुआत भी कहीं न कहीं इन शक्तियों के सम्मान से जुड़ी थी।

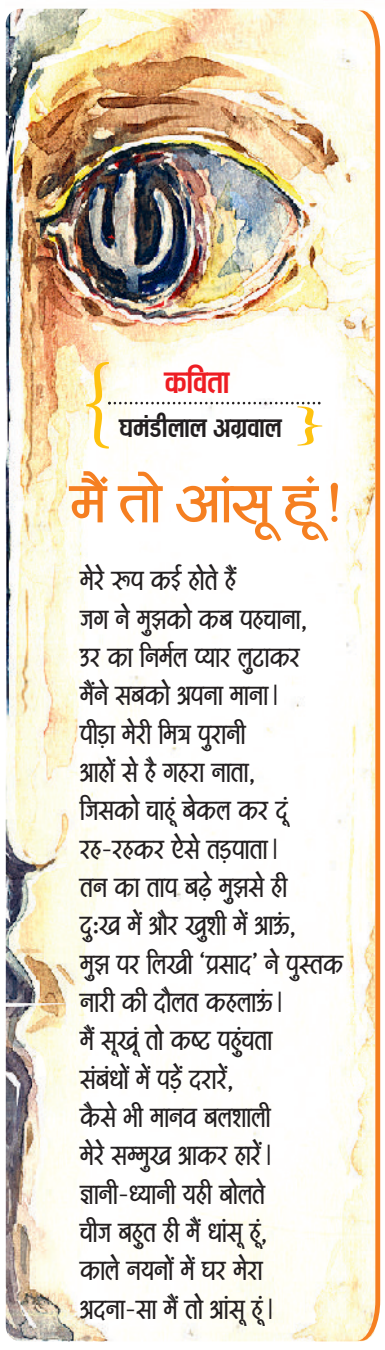
मेसोपोटामिया सभ्यता में प्रेम-युद्ध की देवी इश्तार: दजला और फरात नदियों के किनारे विकसित हुई मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक और सीरिया) की प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियन सभ्यताओं में देवी 'इन्नाना' या 'इश्तार' की पूजा का व्यापक प्रचलन था। इश्तार को प्रेम, सौंदर्य, उर्वरता के साथ-साथ युद्ध की भी देवी माना जाता था। शेर की सवारी करने वाली देवी इश्तार का यह हिंसक और ममतामयी दोहरा स्वरूप बिल्कुल भारतीय सिंहवाहिनी मां दुर्गा जैसा ही है। यह इस बात का ऐतिहासिक साक्ष्य है कि मानव सभ्यता के शुरुआती दौर में भी शक्ति को एक योद्धा और रक्षक के रूप में ही देखा गया।

चीन-जापान में गुआन यिन और अमातेरासु: पूर्वी एशिया की बौद्ध और शिंतो परंपराओं में भी शक्ति पूजा ने अपना स्वरूप बदला लेकिन अपनी मूल भावना को बनाए रखा। चीन में 'गुआन यिन' को करुणा, दया और मातृत्व की देवी के रूप में पूजा जाता है। यद्यपि वे बौद्ध परंपरा से जुड़ी हैं, लेकिन आम जनमानस में उनका स्थान एक रक्षक माता का ही है। वहीं जापान की पारंपरिक शिंतो संस्कृति में


चीन में बौद्ध परंपरा की देवी गुआन यिन

'अमातेरासु' को सूर्य की देवी और संपूर्ण ब्रह्मांड की निर्मात्री माना गया है। जापानी शाही राजवंश स्वयं को सूर्य देवी अमातेरासु का वंशज मानता है, जो यह साबित करता है कि वहां राजसत्ता की शक्ति का स्रोत भी एक महिला देवी ही हैं।

अमेरिका में माया और एज्टेक की प्रकृति पूजा: कोलंबस के अमेरिका पहुंचने से बहुत पहले, वहां की समृद्ध माया और एज्टेक सभ्यताओं में प्रकृति को ही शक्ति का जीवंत रूप मानकर पूजा जाता था। एज्टेक सभ्यता में 'कोटलीक्यू' को जीवन और मृत्यु की देवी, यानी 'धरती माता' के रूप में पूजा जाता था। उनका स्वरूप भी स्कंदमाता और काली के समान उग्र और सृजनात्मक था। वहीं माया सभ्यता में 'इशचेल' को चंद्रमा, चिकित्सा और बुनाई की देवी माना जाता था। इन संस्कृतियों में फसल कटाई के समय मातृ शक्ति को धन्यवाद देने के लिए बड़े उत्सव मनाए जाते थे, जो हमारे यहां की 'नवान्न' या 'लोहड़ी', 'पोंगल' परंपरा जैसी ही है। *



कविता
घमंडीलाल अग्रवाल

मैं तो आंसू हूं!

मेरे रूप कई होते हैं
जग ने मुझको कब पहचाना,
उर का निर्मल प्यार लुटाकर
मैंने सबको अपना माना।
पीड़ा मेरी मित्र पुरानी
आहों से है गहरा नाता,
जिसको चाहूं बेकल कर दूं
रह-रहकर ऐसे तड़पाता।
तन का ताप बढ़े मुझसे ही
दुःख में और खुशी में आऊं,
मुझ पर लिखी 'प्रसाद' ने पुस्तक
नारी की दौलत कहलाऊं।
मैं सूखूं तो कष्ट पहुंचता
संबंधों में पड़ें दरारें,
कैसे भी मानव बलशाली
मेरे सम्मुख आकर हारें।
ज्ञानी-ध्यानी यही बोलते
चीज बहुत ही मैं धांसू हूं,
काले नयनों में घर मेरा
अदना-सा मैं तो आंसू हूं।

व्यंग्य / डॉ. यशोधरा भटनागर

दोस्ती का डेटा पैक



हम बड़े भाग्यशाली समय में जी रहे हैं, जब हमारे पास दोस्तों की कोई कमी नहीं हैं। हमारे इतने दोस्त हैं कि हम खुद भूल जाते हैं कि आखिर हम किसके दोस्त हैं और कौन हमारा? भाग्यशाली समय की हर सुबह अपने दोस्तों से मिलने के साथ शुरुआत होती है और वो भी घर बैठे। मोबाइल उठाया अंगुली से स्क्रीन पर हल्का-सा स्पर्श किया, दोस्ती की दुनिया खुल जाती है। हजारों दोस्त एक साथ कतार में खड़े मिलते हैं। अब पुराने जमाने की तरह चाय पिलाने, हाल-चाल पूछने, या दुःख-सुख बांटने की कोई झंझट नहीं। यहां सब काम लाइक और इमोजी से चल जाता है।

पहले दोस्ती का मतलब था, आप बीमार पड़ें तो कोई दवा ला दे। अब दोस्ती का मतलब है, आप बीमार पड़ें तो सौ लोग लिख दें 'गेट वेल सून।' लिखने वाला इस परम विश्वास से संदेश भेजता है कि यह वाक्य दवा और दुआ से भी ज्यादा प्रभावी तरीके से काम करेगा। लिखने वाले भी निश्चिंत हो जाते हैं कि उसने दोस्ती का फर्ज अदा किया। मोबाइल में इतने 'गेट वेल' बरसते हैं कि बीमारी भी ठिठककर सोचती है। यहां दर्द असली है, या महज रस्म अदायगी है?

अब यह नई संवेदना है, जिसमें आदमी घर से नहीं निकलता, पर भावनाएं पूरी तरह आउटसोर्स कर देता है। भावनाएं डाक से नहीं, डेटा से जाती हैं और कभी-कभी 'डिलीवर' भी नहीं होतीं। इतनी फर्ज अदायगी के बाद अगर मरीज स्वस्थ हो जाए तो ठीक, नहीं तो अगली पोस्ट 'ओम शांति' की तैयारी है। सोशल मीडिया ने दोस्ती को बहुत लोकतांत्रिक बना दिया है। अब आप किसी को जानते हों या न जानते हों, दोस्ती हो सकती है। मेरे एक परिचित हैं, जो हर सुबह कई सौ लोगों को 'गुड मॉर्निंग' भेजते हैं। मैंने पूछा, 'भैया क्या आप इन सबको जानते हैं?' वे बोले, 'नहीं, पर ये सब मेरे फ्रेंड्स हैं।' मैंने सोचा, अगर यही दोस्ती है तो मोहल्ले का किराना दुकानदार मेरा आत्मीय मित्र हुआ। कम से कम वह हर महीने उधार का हिसाब पूछते समय मेरा चेहरा तो पहचान लेता है। इन ऑनलाइन दोस्तों की तरह सिर्फ डी.पी. वाला चेहरा ही नहीं पहचानता। अब आदमी के जीवन में दोस्ती का नए पैमाने, नए मापदंड बन गए हैं-लाइक्स। जिसकी पोस्ट पर ज्यादा लाइक, वह ज्यादा लोकप्रिय। लोग फोटो डालते हैं। कभी कॉफी के कप के साथ, कभी जिम में पसीना बहाते हुए, कभी पहाड़ों में मुस्कुराते हुए और नीचे सैकड़ों लोग लिख देते हैं। 'वाह!' या फिर 'कमाल है!'

हमें तो कभी-कभी लगता है कि अगर न्यूटन आज होते तो वे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत नहीं खोजते, बल्कि यह खोजते कि पोस्ट पर लाइक किस तरह और किस गति से गिरते हैं? ऑनलाइन दोस्ती की एक और खूबी है। यहां हर आदमी बहुत खुश दिखाई देता है। कोई लिख रहा है, 'लाइफ इज ब्यूटीफुल।' कोई लिख रहा है, 'फीलिंग ब्लेस्ड।' जबकि उसी आदमी की असली जिंदगी में बिजली का बिल, बच्चों की फीस और बॉस की डांट उसकी प्रतीक्षा कर रही होती है। पर इन सब चिंताओं के बीच फुर्सत पाते ही वह एक नई फोटो डाल देता है, मानो हर समस्या हल हो गई। एक दिन हमने अपने मोहल्ले के गुड्डू से यूं ही पूछ लिया, 'भैया तुम्हारे कितने दोस्त हैं?'

'पूरे चार हजार आठ सौ। पांच हजार में दो सौ कम।' उसने बड़े गर्व के साथ मुस्कुराते हुए जवाब दिया। हमने कहा, 'अच्छा है, फिर तो तुम्हें कभी अकेलापन नहीं लगता होगा।''नहीं! नहीं! ऐसा कुछ नहीं। अकेलापन अपनी जगह है। रात को मोबाइल बंद होता है, तो दोस्ती भी 'स्लीप मोड' में चली जाती है। छत की ओर एकटक देखते हुए सोचता हूं, 'इतने सारे दोस्त हैं, पर बात किससे करूं?' उसकी बात सुनकर हम सोचने लगे। इतने दोस्तों के होते हुए भी अकेलापन?' क्योंकि दोस्ती में अब मेहनत नहीं है। मित्रों, दोस्ती का नया ज्ञान और विज्ञान यह है कि डिजिटल की दोस्ती भी बड़ी प्रगतिशील हो गई है। न इंतजार है, न रूठना है, न मनाना है। बस अंगूठा चलाना है। और दोस्त पसंद न आए तो ब्लॉक कर अंगूठा दिखाना है। संवेदनाएं शब्दों की मोहताज हो गईं हैं और भावनाओं ने इमोजी की शक्ल अख्तियार कर ली है। *

लघुकथा / सूर्यदीप कुशवाहा

कच्ची दीवार

अनन्या एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसकी कार्यक्षमता, अनुशासन और टीम के नेतृत्व करने की काबिलियत का हर कोई कायल था। इस वर्ष ऑपरेशंस हेड का पद खाली होने वाला था और अनन्या अपनी योग्यता के आधार पर इसकी सबसे प्रबल दावेदार थी। उसी विभाग में राहुल भी मैनेजर था। राहुल काम में औसत था, लेकिन उसकी नेटवर्किंग और ऑफिस के पुरुष सहयोगियों के साथ शाम की पार्टियों में उपस्थिति उसे मैनेजमेंट की नजरों में बनाए रखती थी।

पदोन्नति के इंटरव्यू का दिन आया। अनन्या ने पिछले तीन वर्षों के अपने शानदार रिकॉर्ड, कंपनी के बढ़ते हुए प्रॉफिट और टीम की सफलता का पूरा डेटा प्रस्तुत किया। दूसरी ओर, राहुल का प्रस्तुतीकरण सामान्य था। इंटरव्यू बोर्ड के मुख्य सदस्य मिस्टर खन्ना ने अनन्या से एक ऐसा सवाल पूछा, जो शायद ही किसी पुरुष उम्मीदवार से पूछा जाता। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'अनन्या, आपका काम तो बेहतरीन है, लेकिन पता चला है कि आप फैमिली प्लानिंग के बारे में सोच रही हैं। यह पोस्ट तो बहुत जिम्मेदारी वाला है, ऐसे में क्या आप फैमिली के साथ ऑफिस की नई जिम्मेदारियां संभाल पाएंगी?' यह सवाल सुनकर अनन्या सन्न रह गई। उसकी योग्यता पर उसकी व्यक्तिगत जीवन को भारी माना जा रहा था। कुछ दिनों बाद घोषणा की गई कि राहुल को ऑपरेशंस हेड बना दिया गया। कारण बताया गया कि राहुल ज्यादा फ्लेक्सिबल है और जरूरत के समय उपलब्ध रह सकता है। यह अधिकतर कार्यालयों में व्याप्त उस ग्लास सीलिंग का जीवंत उदाहरण था, जहां महिलाओं को उनकी क्षमता के बजाय उनकी सामाजिक भूमिकाओं के तराजू में तौला जाता है। लेकिन अनन्या ने हार नहीं मानी। उसने एचआर विभाग में निष्पक्ष समीक्षा की मांग की और अपनी परफॉर्मेंस के आंकड़ों के साथ औपचारिक शिकायत दर्ज कराई।



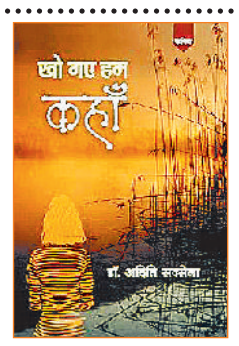
उसने साफ शब्दों में कहा, 'प्रतिबद्धता और काबिलियत का पैमाना जेंडर नहीं, बल्कि रिजल्ट होना चाहिए।' अनन्या के साहस ने दबे स्वर में बात कर रही अन्य महिला सहकर्मियों को भी प्रेरित किया। मामला मुख्यालय तक पहुंचा और जांच में पाया गया कि राहुल का चयन पक्षपातपूर्ण था।

अंततः प्रबंधन को अपनी गलती सुधारनी पड़ी। अनन्या को न केवल वह पद मिला, बल्कि कंपनी ने नई नीतियां लागू कीं ताकि भविष्य में किसी भी महिला की योग्यता को उसके घरेलू भविष्य के अनुमानों से न आंका जाए। अब असमानता की कच्ची दीवार टूट गई थी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी कविताएं

पेशे से फिजियोथेरेपिस्ट डॉक्टर अदिति सक्सेना के भीतर एक कवि मन भी है। इसको प्रमाणित करता है हाल में छपकर आया उनका पहला कविता संग्रह-खो गए हम कहां। इसमें अपने आस-पास की दुनिया के साथ ही देश और पूरी मनुष्यता के प्रति उनकी संवेदनशीलता प्रकट होती है। इस लिहाज से 'बंटवारा' कविता को पढ़ा जा सकता है। कुछ ऐसे ही भाव 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' कविता में भी प्रकट हुए



हैं तो कवयित्री को अपने देश के जांबाज सैनिकों पर भी गर्व है। इसे उन्होंने ओजस्वी शब्दों में 'हमारे वीर वायु योद्धा' में व्यक्त किया है। इन सबके साथ पुरुष प्रधान समाज में एक स्त्री को किस तरह हमेशा डरे-सहमे रहने को विवश होना पड़ता है, इस त्रासदी को बहुत मार्मिकता के साथ अदिति ने 'बलात्कार' कविता में शब्दबद्ध किया है। इसी तरह संग्रह की अनेक कविताओं में जीवन और समाज की तमाम विसंगतियों, विडंबनाओं के काव्यात्मक चित्र देखे जा सकते हैं। *

पुस्तक: आ गए हम कहां (कविता संग्रह), **लेखिका:** डॉ. अदिति सक्सेना, **मूल्य:** 350 रुपए, **प्रकाशक:** भावना प्रकाशन, दिल्ली

द्वीपीय जीवन-संस्कृति की झलक दिखाता

अंडमान-निकोबार का कोकोनट कार्निवल



नारियल की खुशबू, समुद्री लहरों की हरहराती आवाज और स्थानीय संस्कृति के विविध रंग, अंडमान और निकोबार द्वीप का कोकोनट कार्निवल इन सबको एक साथ समेटता है। हर वर्ष आयोजित होने वाला यह उत्सव, नारियल के बहाने इन द्वीपों के खान-पान, परंपरा, कला और संस्कृति से भी रूबरू कराता है।

पर्व-संस्कृति
धीरज बसाक

समुद्र के बीच में बसे द्वीपों की अपनी एक अलग भाषा होती है। रास्तों के किनारे झूमते नारियल के पेड़ किसी स्वागत द्वार की तरह लगते हैं और दूर तक फैला नीला पानी यह एहसास करा देता है कि भारत की भौगोलिक कहानी सिर्फ पहाड़ों, मैदानों और रेगिस्तान तक ही सीमित नहीं है। अंडमान-निकोबार पहुंचकर नजर जब नारियल के पेड़ों पर ठहरती है, तो समझ में आता है कि यहां नारियल महज एक फल या पेड़ नहीं बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी, खानपान और स्थानीय अर्थव्यवस्था का हिस्सा भी है। इस रिश्ते को उत्सव में बदल देता है यहां का कोकोनट कार्निवल, जो इस साल 17 से 18 अक्टूबर 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, विजय पुरम पोर्ट ब्लेयर में आयोजित होगा।

द्वीपीय जीवनशैली को करीब से देखने का मौका

अंडमान-निकोबार में हर साल अक्टूबर माह में आयोजित होने वाला यह यह पारंपरिक मेला, अपना एक अलग ही चुंबकीय आकर्षण रखता है। इस मौके पर यहां आने वाले पर्यटकों को इन द्वीपों की असली जीवनशैली को करीब से देखने का मौका मिलता है। नारियल से बने खाद्य पदार्थ, स्थानीय उत्पाद, हस्तशिल्प, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और स्थानीय स्वाद, सब मिलकर इसे सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं बल्कि अंडमान की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान की झलक बना देते हैं। सैलानियों के लिए किसी जगह की असली खूबसूरती उसके प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों से आगे शुरू होती है। समुद्र तटों की तस्वीरें तो हर पर्यटक खींचता है, लेकिन उन समुद्र तटों के आस-पास रहने वाले लोगों का जीवन कैसा है, वे क्या खाते हैं, क्या बनाते हैं और अपनी प्राकृतिक संपदा को किस तरह देखते हैं? इस सबको जानना यात्रा को एक अनोखा अनुभव बना देता है।

समझ आती है नारियल की बहुपयोगिता



यहां पहुंचकर लोगों को पता चलता है कि नारियल सिर्फ मंदिर में चढ़ाने या कुछ मिठाईयों में इस्तेमाल होने तक सीमित नहीं है। इसकी उपयोगिता की बहुत लंबी-चौड़ी लिस्ट है। इसका पानी हमारी प्यास बुझाता है। इसकी गिरी हमारे भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है। इसका तेल खान-पान से लेकर दूसरे घरेलू कामों में इस्तेमाल होता है, जबकि इसकी जटा और खोल से कई तरह के उपयोगी उत्पाद बनाए जाते हैं। द्वीपों में इसकी मौजूदगी इतनी स्वाभाविक है कि पर्यटकों को शायद पहली नजर में इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक भूमिका का अंदाजा भी न हो। कोकोनट कार्निवल इसी रोजमर्रा की चीज को उत्सव के केंद्र में लाकर इसके महत्व को उजागर करता है।

अलग-अलग तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ

इस कार्निवल की एक और खूबी है, यहां पर बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों के लजीज स्वाद। अंडमान की यात्रा समुद्री भोजन के स्वाद के बिना अधूरी रहती है। स्थानीय भोजन में कई तरह के समुद्री खाद्य पदार्थों के साथ नारियल की संगति यहां देखते ही बनती है। नारियल आधारित चटनियां, करी और दूसरे स्थानीय व्यंजन यहां आने वाले पर्यटकों को उस स्वाद से परिचय कराते हैं, जो किसी होटल के सामान्य मेन्यू में नहीं मिलता। शाकाहारी यात्रियों के लिए भी यहां नारियल आधारित व्यंजनों की अपनी भरी-पूरी दुनिया है।

संस्कृति के विविध आयामों से परिचय

अंडमान-निकोबार कोकोनट कार्निवल, खान-पान के जरिए भी सैलानियों के सामने स्थानीय संस्कृति परोसता है। यहां की संस्कृति के विविध आयाम हैं, जो सदियों से रह रहे यहां के अनेक समुदायों की परंपराओं से मिलकर बनी है। स्थानीय संगीत और नृत्य, हस्तशिल्प तथा रोजमर्रा के जीवन से जुड़े उत्पाद, इस बात का एहसास कराते हैं कि द्वीपों की संस्कृति मुख्य भूमि से अलग होते हुए भी उसमें भारत की विविधता के चटक रंग घुले हुए हैं।

अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

इस कोकोनट कार्निवल में आया कोई पर्यटक जब स्थानीय उत्पाद खरीदता है, स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेता है या स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियां देखता है, तो इससे यहां की स्थानीय अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचता है। इस तरह उत्सव पर्यटन को केवल होटल्स और दर्शनीय स्थलों तक सीमित रखने की बजाय उसे स्थानीय समुदायों से जोड़ देता है।

हर अनुभव होता है यादगार

सुबह समुद्र के किनारे सूर्योदय, दिन में द्वीपों की सैर और स्थानीय बाजारों की खोज तथा शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव। कोकोनट कार्निवल के समय यहां आने वाले पर्यटक अपनी आंखों में सिर्फ अंडमान-निकोबार द्वीप की खूबसूरती ही नहीं ले जाते बल्कि इस सांस्कृतिक अनुभव को भी ले जाते हैं, जो जीवन भर उनके मन में यहां की याद ताजा बनाए रखता है। कोकोनट कार्निवल की सबसे खूबसूरत बात यही है कि यह किसी पर्यटन अनुभव की नकल करने की बजाय स्थानीय जीवन के साधारण चीज को उत्सव में बदल देता है। एक नारियल के बहाने, प्रकृति, भोजन, रोजगार, हस्तशिल्प, लोकसंस्कृति और पर्यटन, सब एक ही फ्रेम में दिखाई देने लगते हैं। *

रखें इन बातों का ध्यान

किसी भी द्वीपीय पर्यटन की तरह यहां भी जिम्मेदाराना पर्यटन बहुत जरूरी है। अंडमान-निकोबार के समुद्र तट इसलिए भी लोगों को आकर्षित करते हैं, क्योंकि ये साफ-सुथरे हैं। ऐसे में यह पर्यटकों की जिम्मेदारी भी बनती है कि ये साफ-सुथरे समुद्र तट, बाकी सैलानियों के लिए भी ऐसे ही बने रहें, इसलिए प्लास्टिक कचरा न फैलाना, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी का सम्मान करना, स्थानीय समुदायों और उनकी परंपराओं की तस्वीर या वीडियो लेने से पहले अनुमति लेना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना जैसी बातों का पालन करें। भले ये छोटी बातें लगती हों, लेकिन संवेदनशील द्वीपों के लिए इनका बड़ा महत्व है।

सफल और समृद्ध जीवन की कामना हम सभी करते हैं। इसे हासिल किया जा सकता है, लेकिन इसके लिए आपके व्यक्तित्व और व्यवहार में कुछ विशेष गुणों का होना जरूरी है। इस बारे में जानिए।

आपको सफल-समृद्ध बनाएंगी

व्यक्तित्व की खूबियां-आदतें

सक्सेस मंत्र
नेहा जैन



किसी ने क्या खूब कहा है, दौलत तिजोरी या बैंक खाते में आने से पहले सोच में जन्म लेती है। यानी सफल और समृद्ध होने के लिए हमारी सोच और व्यक्तित्व में कुछ आदतों का शामिल होना जरूरी है।

खुद पर भरोसा: हर बड़ी उपलब्धि की शुरुआत तालियों से नहीं होती। कई बार शुरुआत संदेह और उपहास से होती है। असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले लोगों में अपने विचार और अपनी क्षमता पर एक मजबूत विश्वास दिखाई देता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे हर समय सही होते हैं। बल्कि वे गलत होने की संभावना के बावजूद कोशिश करने का साहस रखते हैं। आत्मविश्वास का सही अर्थ है- 'मुझे सब कुछ नहीं आता, लेकिन मैं सीख सकता हूं।' यही सोच नया व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है।

भविष्य का सही अनुमान लगाने की आदत: आम लोग व्यवसाय के लिए देखते या विचार करते हैं कि आज बाजार में क्या चल रहा है? लेकिन असाधारण सोच वाला व्यक्ति सोचता है कि कुछ वर्षों बाद लोग क्या चाहेंगे? बाजार में किस उत्पाद या सेवा की मांग होगी। यही फर्क कई बार विचार और नवाचार के बीच होता है। तकनीक बदल रही हैं, लोगों की आदतें बदल रही हैं, काम करने के तरीके बदल रहे हैं- इन बदलावों को समझकर आगे की तैयारी करना दूरदृष्टि है।



आलोचना से बेपरवाह: जैसे ही आप कुछ नया करेंगे, राय देने वाले लोग मिल जाएंगे। कोई कहेगा, 'यह तुम्हारे बस का नहीं।' कोई कहेगा, 'इसमें पैसा नहीं है।' कोई आपके पुराने अनुभवों का हवाला देकर आपको रोकने की कोशिश करेगा। आलोचना से भागना नहीं चाहिए। लेकिन हर राय को दिल और दिमाग पर नहीं लेना चाहिए। इस विषय में सुलझा हुआ तरीका है सलाह सुनो, उसके तथ्य जांचो, उपयोगी बात अपनाओ और अंतिम निर्णय सोच-समझकर खुद लो।

बेहतर बनने की भूख: असाधारण लोग केवल सफलता पाने की इच्छा नहीं रखते। वे अपने काम में उत्कृष्टता की तलाश करते रहते हैं। यह मानसिकता दूसरों को हराने की तुलना में कहीं अधिक उपयोगी है। यह सूत्र लंबे समय में असाधारण परिणाम दे सकता है।

वर्तमान सुख के बदले बड़ा लक्ष्य: मान लीजिए आपके सामने दो विकल्प हैं अभी दो घंटे मोबाइल पर मनोरंजन या वही दो घंटे किसी जरूरी कौशल को सीखने में लगाना। तुरंत मिलने वाला सुख आकर्षक होगा। लेकिन भविष्य का लाभ अकसर कम दिखाई देता है। इसीलिए आत्म-अनुशासन इतना महत्वपूर्ण है। इसका मतलब जीवन से आनंद खत्म करना नहीं है। इसका अर्थ है यह समझना कि हर इच्छा को तुरंत पूरा करना जरूरी नहीं।

पैसे की बचत जरूरी: सफल-समृद्ध लोग जानते हैं कि धन का अर्थ केवल अधिक कमाना नहीं है। धन को संभालना, बचाना और समझदारी से उपयोग करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कोई व्यक्ति आय बढ़ा सकता है, लेकिन यदि उसका पूरा पैसा अनियोजित खर्च हो जाए तो आर्थिक सुरक्षा नहीं बनती। यानी पैसे को केवल उपभोग में खत्म करने के बजाय उसे भविष्य के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

जिम्मेदारी स्वीकार करना: जीवन में बहुत कुछ हमारे नियंत्रण से बाहर होता है। बाजार, मौसम, दूसरे लोगों के फैसले और कई परिस्थितियां हमारे हाथ में नहीं होतीं। साथ ही आपको समझना चाहिए कि हर परिस्थिति में कुछ न कुछ ऐसा जरूर होता है, जिस पर हमारा नियंत्रण रहता है जैसे-हमारी तैयारी, हमारा व्यवहार, हमारा अगला कदम। यही जिम्मेदारी की भावना व्यक्ति को निष्क्रिय शिकायत से सक्रिय प्रयास की ओर ले जाती है।

सीमित जोखिम लेना: सफलता की कहानियां अकसर जोखिम से जुड़ी होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सफल व्यक्ति आंख बंद करके जोखिम लेते हैं। समझदारी यह है कि जोखिम और संभावित लाभ दोनों को देखा जाए। किसी नई स्किल को सीखने में समय लग सकता है, लेकिन वह वर्षों तक उपयोगी हो सकती है। कोई नया व्यवसाय शुरू करने से पहले बाजार, पूंजी, मांग और संभावित नुकसान समझना जरूरी है। *

हालांकि पान मूल रूप से भारतीय पौधा नहीं है। लेकिन इसकी पहचान प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति से जुड़ी हुई है। पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक संदर्भों, पूजा-पाठ से लेकर औषधि और सामाजिक प्रतिष्ठा के तौर पर इसका उपयोग किया जाता रहा है।

प्राचीन काल से बरकरार है

भारतीय संस्कृति में पान की शान

संस्कृति
शाहिद ए. चौधरी





पान के पत्ते को लेकर रामकथा में सुंदर प्रसंग का वर्णन मिलता है। भगवान श्रीराम का संदेश लेकर जब हनुमानजी लंका की अशोक वाटिका में पहुंचे तो संदेश पाकर माता सीता अत्यधिक प्रसन्न हो गईं और वह इसके लिए हनुमानजी को कोई उपहार देना चाहती थीं, लेकिन उन्हें आस-पास कोई फूल नहीं मिला। तब उन्होंने पास के एक पौधे से ताजा पत्ते तोड़े और उनको आपस में गूंथकर, आशीर्वाद के साथ हनुमानजी को प्रदान किया। वह पौधा पान का था। चूंकि यह प्रेमाशीष माता सीता से उन्हें मिला था, इसलिए हनुमानजी के लिए पान के पत्ते अति प्रिय हो गए, विशेषकर इसलिए कि यह सम्मान, शुद्धता व नई शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं। मान्यता है कि तभी से पूजा के दौरान जब हनुमानजी को पान के पत्ते या उनकी माला को अर्पित किया जाता है, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं क्योंकि इससे उन्हें माता सीता के आशीष की याद आ जाती है। इससे हनुमानजी भक्त को सुख, अच्छी सेहत के आशीर्वाद के अतिरिक्त उसके समक्ष आने वाली बाधाएं भी दूर कर देते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णन: पान, जिसे तंबुला भी कहते हैं, का उल्लेख प्राचीन संस्कृत, तमिल साहित्य और पांचवीं शताब्दी के कालिदास के लेखन में भी मिलता है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में पान की तारीफ करते हुए बताया गया है कि यह पाचन में मदद करता है, श्वास में ताजगी लाता है और शरीर के दोषों को संतुलित करता है। कामसूत्र में कहा गया है कि पान चबाने से पौरुष में वृद्धि होती है। इस पृष्ठभूमि में पान का भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा बनना स्वाभाविक था और वह भी इस सीमा तक कि प्राचीन व मध्ययुग की हिंदू रियासतों (जैसे कन्नौज) में राजा के हाथों से पान हासिल करना बहुत बड़ा शाही सम्मान माना जाता था। स्वागत व विदाई में पान के पत्तों की संख्या से हैसियत मालूम होती थी- राजा को 32 पान, राजकुमार को 24 पान, ज्ञानी को 12 पान और साधारण व्यक्ति को 4 पान प्रदान किए जाते थे। औपचारिक समारोह में मेजबान दोनों हाथों से पान पेश करता था। दूसरों के सामने पान खाना और उन्हें पेश न करना अभद्रता में शुमार होता था। प्रतिद्वंदी से पान लेने के लिए मजबूर होना अपमान का घूंट पीना था। महिला द्वारा पुरुष को पान देना उसे आमंत्रित करना था।

इतिहास में मिलते हैं संदर्भ: दिलचस्प बात यह है कि पान, भारतीय पौधा नहीं है। यह इंडोनेशिया के द्वीपों व मलय प्रायद्वीप से पानी के व्यापारी जहाजों के जरिए भारत आया। कर्नाटक के बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर (जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में होयसल राजवंश ने कराया था) की बाहरी दीवारों पर एक महिला को पान के पत्ते लिए हुए दर्शाया गया है, जिससे मालूम होता है कि पान को भारत में सदियों पहले स्वीकृति मिली और अब कोई हिंदू समारोह इसके बिना पूर्ण नहीं होता है।

तमिल संगम कविता 2,000 वर्ष पुराने संसार को बयान करती है जो पान से परिचित थी। पातिप्पलाई कविता में पुहार के व्यस्त बाजारों का वर्णन है, जहां पान के पत्ते बेचे जाते थे। मदुरैकांची कविता में पान की खेती व बिक्री का जिक्र मिलता है, जबकि कुसुंटोकाई कविता में बताया गया है कि छाली के साथ पान पेश करना मेजबानी व प्रेम का प्रतीक माना जाता था। असम में मेहमान को सबसे पहले छालियां या सुपारी पेश की जाती थीं। भूटान में जब भी दो लोग मिलते तो 'डोमा ज्हेस' (कृपया पान व छाली लें) कहते।

मुगलकाल में पान का सेवन ललित कला के स्तर तक पहुंच गया। चांदी व सोने के पानदान कुलीन जीवन का आवश्यक अंग बन गए। यूरोपीय यात्रियों जैसे थॉमस रो ने लिखा है कि बादशाह जहांगीर के अपने पानदान से पान मिलना जबरदस्त राजनयिक सम्मान का प्रतीक था। दिल्ली व लखनऊ के नवाबी दौर में पान शेर-ओ-शायरी, संगीत व तवाइफों की तहजीब का हिस्सा बन गए। ब्रिटिशकाल में पान का कुलीन सांस्कृतिक स्टेटस कम होने लगा। ब्रिटिश प्रशासनिक व सेनेटरी दृष्टिकोण के तहत पान को 'गंदी देशज प्रथा' के रूप में देखा जाने लगा। छाली व तंबाकू युक्त पान खाने की आदत को मुंह व गले के कैंसर से जोड़ा जाने लगा। लेकिन इस 'कोलोनियल कलंक' के बावजूद पान खाने का सिलसिला जारी रहा।

बरकरार है रुतबा: आज भी रोजमर्रा के स्ट्रीट फूड के रूप में (देश के लगभग हर शहर में आपको पनवाड़ी की दुकान मिल जाएगी), खाने के बाद हाजमे के लिए और मेहमाननवाजी के तौर पर शादियों, उत्सवों व समारोह में। पहले जहां सिर्फ तीन किस्म के पान खाए जाते थे- मीठा पान (गुलकंद, तिल, नारियल आदि युक्त), सादा पान (सिर्फ कत्था, चुना व छाली सहित) व जर्दा पान (तंबाकू सहित) तो अब चॉकलेट, फ्रूट-फ्लेवर, फायर पान आदि भी आ गए हैं। *

शायरों की नजर में पान का अंदाज



'जब हम-कलाम हम से होता है पान खाकर/किस रंग से करे है बातें चबा-चबाकर।' मीर तकी मीर ने अपने इस शेर में फ्लर्ट करने के रोजमर्रा के पलों का शानदार नक्शा खींचा है, जिसमें प्रेमिका का पान खाना लालित्य व शरारत का माध्यम बन जाता है। पान चबाने से बोलना जानबूझकर धीमा, रंगीन, प्यारा व आकर्षण भरा हो जाता है। प्रेमी न सिर्फ शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जाता है बल्कि इस वजह से भी कि हर 'चबाया' हुआ वर्ण शोखी में बदल जाता है। प्रेमिका के इस अंदाज से पान खाने पर मुसहफी गुलाम हमदानी कहते हैं- 'पान खाने की अदा ये है तो इक आलम को/खून रुलाएगी मिरी जान दहन-ए-सुर्ख तिरा।' लेकिन जब प्रेमिका अपने प्रेमी को पान देती है, तो असद अली खान कलक के शब्दों में यह होता है- 'होठों में दाब कर जो गिलौरी दी यार ने/क्या दांत पीसे गैरों ने क्या-क्या चबाए होंठ।' इसी विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस तरह से कहा है- 'लगावट की अदा से उनका कहना पान हाजिर है/कयामत है सितम है दिल फिदा है जान हाजिर है।'

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में भक्ति गीत और भजनों का क्रेज रहा है। इनमें भी मां दुर्गा को समर्पित कई गीत तो बेहद लोकप्रिय हुए और आज भी उनकी लोकप्रियता बरकरार है। यहां कुछ ऐसे ही लोकप्रिय फिल्मी गीतों पर नजर डाल रहे हैं, जिनमें मां दुर्गा की महिमा का वर्णन या उनकी शक्ति का आह्वान किया गया है।

मां दुर्गा की महिमा से दमकते

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीत

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश



फिल्म 'अवतार' का गीत 'चलो बुलावा आया है..'



फिल्म 'सुहाग' का गीत 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा'

धर्म का प्रतिनिधित्व करती हुई जब कोई फिल्म बनती है, तो उसे देखने के नए रिकॉर्ड बनते हैं और जब किसी फिल्म में चमत्कार होता है, तो वह उस फिल्म का हिट पक्ष बन जाता है। यूं तो लगभग हर देवी-देवता की बॉलीवुड फिल्मों में गीतों में स्तुति हुई है लेकिन उनमें से कुछ देवी-देवताओं पर अधिक गीत बनाए गए हैं। मां दुर्गा और उनके विभिन्न स्वरूपों का गुणगान, बॉलीवुड फिल्मों के गीतों में खूब किया जाता रहा है। कुछ फिल्में तो ऐसी हैं, जिनमें शामिल किए गए मां दुर्गा के एक गीत या भजन ने उस फिल्म को भरपूर लोकप्रियता प्रदान की। 'अवतार', 'आशा' और 'सुहाग' जैसी कई फिल्में इसका बेहतरीन उदाहरण हैं।

'अवतार' का 'चलो बुलावा आया है': फिल्म 'अवतार' वर्ष 1983 में जब आई तो इसकी कहानी ने दर्शकों के दिलों को स्पर्श कर लिया। राजेश खन्ना और शबाना आजमी ने इस फिल्म में ऐसे माता-पिता का रोल प्ले किया है, जिन्होंने अपने बच्चों के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया। इसी में जब बच्चा अधिक बीमार होता है, तो दोनों माता वैष्णो देवी के दरबार में जाते हैं और वहां जो चमत्कार होता है, वही इस फिल्म का अहम हिस्सा बन जाता है। फिल्म में नरेंद्र चंचल, महेंद्र कपूर और आशा भोसले द्वारा गाया यह गीत 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है', आज भी घरों-मंदिरों में भक्ति-भाव से खूब गाया, सुना और बजाया जाता है। यह मां दुर्गा को समर्पित सबसे लोकप्रिय भक्ति गीतों में से एक है। शारदीय नवरात्र हो या चैत्र नवरात्र माताराणी का यह फिल्मी भजन अवसर को और भी भक्तिमय बना देता है। मां और दुर्गा मां को केंद्र में रखकर बुना गया यह गीत आज भी उतना ही लोकप्रिय है, जितना अपने रिलीज के वक्त हुआ था।



फिल्म 'क्रांतिवीर' का गीत 'जय अंबे जगदंबे मां..'

'आशा' का 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए': सन 1980 में आई फिल्म 'आशा', जितेंद्र, रीना राय और रामेश्वरी के अभिनय से सजी थी। इसमें भी नरेंद्र चंचल और मोहम्मद रफी द्वारा गाया भजन 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए,' खूब लोकप्रिय हुआ। आज चाहे माता वैष्णों के द्वार पर जाने वाले भक्त हों या फिर दूसरे सिद्धपीठों में मां के दर्शन को जाते भक्त, मार्ग से लेकर मंदिर तक, हर कहीं 'तूने मुझे बुलाया शेरा वालिए, मैं आया मैं आया शेरा वालिए..' सुनाई पड़ता है। माता रानी के भक्त इसे भक्ति भावना के प्रदर्शन के साथ-साथ अपनी धार्मिक यात्रा की थकान मिटाने के लिए भी गाते हैं।

'सुहाग' का 'नाम रे सबसे बड़ा तेरा नाम': 1979 की फिल्म 'सुहाग' जब आई तो एंग्री यंग मैन का जमाना था। अमिताभ बच्चन, शशि कपूर तथा रेखा की इस फिल्म का गीत- 'हे नाम रे, सबसे बड़ा तेरा नाम, ओ शेरोंवाली, ऊंचे डेरों वाली, बिगड़े बना दे मेरे काम।' मोहम्मद रफी तथा आशा भोसले ने इसमें जो लय दी है, वह ही इसको ऑल टाइम हिट बना गई। मंदिरों से लेकर दुर्गा पंडालों तक में इसकी मधुर आवाज से भक्त रमे रहते हैं। सही बात तो यह है कि चाहे डांडिया हो या गरबा सभी में इसको खूब बजाया जाता है।



'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत 'मां शेरा वालिए'

नवरात्र पर केंद्रित कई अन्य गीत हुए लोकप्रिय: अलग-अलग दौर में आई कई अन्य फिल्मों में भी मां दुर्गा पर केंद्रित गीत रचे गए। इन गीतों ने भी खूब लोकप्रियता बटोरी। आज भी लोगों के दिलों में इन गीतों की खास जगह है। 'हम दिल दे चुके सनम' का 'ढोली तारो ढोल बाजे, ढोल बाजे ढोल बाजे, की धाम धाम बाजे ढोल...' भी डांडिया पंडालों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना कि इस फिल्म में था। फिल्म 'क्रांति' का 'दुर्गा है मेरी मां, अंबे है मेरी मां' और 'क्रांतिवीर' का 'जय अंबे जगदंबे मां' भी कम प्रसिद्ध नहीं हुए। 'मर्द' में अनु मलिक तथा शब्बीर कुमार का गाया हुआ गीत 'मां शेरोंवाली' उस समय खूब चला, जब यह मूवी आई थी। 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' का गीत इसी से मिलता हुआ था 'मां शेरा वालिए, तेरा शेर आ गया।' फिल्मों से अलग हटकर देखें तो माता के जगराते में भी यही शक्ति केंद्र में रही। आज तक गैर फिल्मी जो सबसे अधिक पसंदीदा गीत बना वह है 'प्यारा सजा है तेरा द्वार भवानी।' इसे तो लोकगायकों ने भी गाया और फिल्मी गायक-गायिकाओं ने भी। 'अंबे तू है जगदंबे' को तो न जाने कितने गायकों ने गाया है और बॉलीवुड ने इसे कई बार दृश्य को एक नया मोड़ देने के लिए प्रयोग किया।

दर्शकों को खूब लुभाया इन गीतों ने: इस बात में संदेह नहीं कि माता दुर्गा के तमाम रूप हैं जिन्हें बॉलीवुड ने जब तब दर्शकों के सामने अलग-अलग गीतों के रूप में पेश किया। इसके लिए फिल्म की कहानी ऐसी रखी गई जिसमें एक भजननुमा गीत इसमें समाहित किया जा सके। कहानी भी ऐसी जिसे देखकर दर्शकों की आंखें नम हो जाएं। कुछ भजनों को इस तरह से तैयार किया गया कि वह डांडिया या गरबा में भी चलें और दुर्गा जागरण या सामान्य तौर पर भक्तों को भक्ति में रमा दें। कहने का सार यही है कि बॉलीवुड फिल्मों में मां शक्ति के विभिन्न रूपों को समर्पित खूब गीत रचे गए और ऐसे गीत खूब लोकप्रिय भी हुए। *